# Syllabus of Sanskrit

**(Semester-wise course structure for Post-Graduation in Sanskrit in CSJM University, Kanpur in accordance with guidelines of NEP-2020)**

**As approved by**
**Board of Studies for Sanskrit**
**C.S.J.M. University, Kanpur**

10/5/22

# CHHATRAPATI SHAHU JI MAHARAJ UNIVERSITY, KANPUR

STRUCTURE OF SYLLABUS FOR THE

## PROGRAM: M.A. , SUBJECT: SANSKRIT

| Syllabus Developed by | | |
|---|---|---|
| **Name of BoS Convenor / BoS Member** | **Designation** | **College/University** |
| DR. ASHA RANI PADNEY | Convenor | D.G. COLLEGE, KANPUR |
| DR. ANIL KUMAR SINHA | | D.A.V. COLLEGE, KANPUR |

| SEMESTER / YEAR | COURSE CODE | TYPE | COURSE TITLE | MIN CREDITS | CIA | ESE | MAX. MARKS |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| I$^{ST}$ YEAR / I$^{ST}$ SEM | A020701T | CORE | वेद, निरूक्त एवं प्रातिशाख्य | 5 | 25 | 75 | 100 |
| | A020702T | CORE | संस्कृत व्याकरण एवं निबन्ध | 5 | 25 | 75 | 100 |
| | A020703T | CORE | काव्य एवं नाटक | 5 | 25 | 75 | 100 |
| | A020704T | CORE | भारतीय दर्शन | 5 | 25 | 75 | 100 |
| | | | | | | | |
| I$^{ST}$ YEAR / II$^{ND}$ SEM | A020801T | CORE | काव्यशास्त्र - I | 5 | 25 | 75 | 100 |
| | A020802T | CORE | संस्कृत व्याकरण एवं भाषा विज्ञान | 5 | 25 | 75 | 100 |
| | A020803T | CORE | भारतीय संस्कृति एवं ज्ञान विज्ञान परम्परा | 5 | 25 | 75 | 100 |
| | A020804T | ELECTIVE | आर्ष काव्य | 5 | 25 | 75 | 100 |
| | A020805T | | धर्मशास्त्र एवं अर्थशास्त्र | | | | |
| | A020806T | | पर्यावरण विज्ञान एवं वैदिक साहित्य | | | | |
| | A020807R | PROJECT | रिसर्च– लघु शोध परियोजना | 8 | 25 | 75 | 100 |
| | | MINOR ELECTIVE | FROM OTHER FACULTY (IN 1$^{ST}$ YEAR) | 4/5/6 | 25 | 75 | 100 |
| | | | | | | | |
| II$^{ND}$ YEAR / III$^{RD}$ SEM | A020901T | CORE | काव्यशास्त्र - II | 5 | 25 | 75 | 100 |
| | A020902T | CORE | संस्कृत व्याकरण | 5 | 25 | 75 | 100 |
| | A020903T | ELECTIVE | वैदिक साहित्य एवं शिक्षा (वेद वर्ग) | 5 | 25 | 75 | 100 |
| | A020904T | | योग एवं वेदान्त (दर्शन वर्ग) | | | | |
| | A020905T | | साहित्यालोक (साहित्य वर्ग) | | | | |
| | A020906T | ELECTIVE | उपनिषद् साहित्य एवं निरूक्त (वेद वर्ग) | 5 | 25 | 75 | 100 |
| | A020907T | | न्याय एवं वैशेषिक दर्शन | | | | |
| | A020908T | | रूपकालोक (साहित्य वर्ग) | | | | |
| | | | | | | | |
| II$^{ND}$ YEAR / IV$^{TH}$ SEM | A021001T | CORE | नाटक एवं नाट्य साहित्य | 5 | 25 | 75 | 100 |
| | A021002T | ELECTIVE | ब्राह्मण एवं आरण्यक साहित्य (वेद वर्ग) | 5 | 25 | 75 | 100 |
| | A021003T | | सांख्य एवं योग (दर्शन वर्ग) | | | | |
| | A021004T | | आधुनिक संस्कृत काव्य (साहित्य वर्ग) | | | | |
| | A021005T | ELECTIVE | ऋग्वैदिक संवादसूक्त एवं निरूक्त (वेद वर्ग) | 5 | 25 | 75 | 100 |
| | A021006T | | न्याय, वैशेषिक, लोकायत एवं जैनदर्शन (दर्शन वर्ग) | | | | |
| | A021007T | | महाकाव्य सौरभम् (साहित्य वर्ग) | | | | |
| | A021008T | ELECTIVE | वैदिक व्याख्यान पद्धतियाँ एवं इतिहास (वेद वर्ग) | 5 | 25 | 75 | 100 |
| | A021009T | | पूर्वमीमांसा एवं बौद्ध दर्शन (दर्शन वर्ग) | | | | |
| | A021010T | | वेदान्त एवं उपनिषद– दर्शन | | | | |
| | A021011T | | लौकिक संस्कृत साहित्य का इतिहास (साहित्य वर्ग) | | | | |
| | A021012T | | आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास | | | | |
| | A021013R | PROJECT | रिसर्च प्रोजेक्ट लघु शोध परियोजना | 8 | 25 | 75 | 100 |

**NOTE:**

1. *A MINOR ELECTIVE FROM OTHER FACULTY SHALL BE CHOSEN IN 1$^{ST}$ YEAR (EITHER Ist / IInd SEMESTER) AS PER AVAILABILITY.
2. In both years of PG program, there will be a Research Project or equivalently a research-oriented Dissertation as per guidelines issued earlier and will be of 4 credit (4 hr/week), in each semester. The student shall submit a report/dissertation for evaluation at the end of the year, which will be therefore of 8 credits and 100 marks
3. Research project can be done in form of Internship/Survey/Field work/Research project/ Industrial training, and a report/dissertation shall be submitted that shall be evaluated via seminar/presentation and viva voce.
4. The student straight away will be awarded 25 marks if he publishes a research paper on the topic of Research Project or Dissertation.

# छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

## Minutes of Meeting of B.O.S. held on the date 10-05-2022 for approval of Syllabus of Sanskrit for affiliated colleges of C.S.J.M. University, Kanpur

नई शिक्षा नीति 2020 के दिशानिर्देशों के अनुसार छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयों के संस्कृत परास्नातक के पाठ्यक्रम को सेमेस्टर के आधार पर बनाये जाने हेतु बोर्ड आफ स्टडीज (B.O.S.) की बैठक सी0एस0जे0एम0 विश्वविद्यालय के राजेश जी तथा अन्य सदस्यों के सहयोग से Online माध्यम द्वारा दिनांक 10.05.2022 को सांय 4.00 बजे से 7.00 बजे तक आयोजित की गयी।

बोर्ड आफ स्टडीज (B.O.S.) की Online सम्पन्न इस बैठक में समस्त सदस्यों के सुझावों तथा दिशानिर्देशों पर मनन करने के पश्चात N.E.P. 2020 के अन्तर्गत संस्कृत परास्नातक के पाठ्यक्रम को छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयों में सत्र 2022–2023 से क्रियान्वित किये जाने हेतु प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया गया।

समिति के सदस्यों के नाम निम्नवत हैं:–

1. कला संकाय अधिष्ठाता
   छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय
   कानपुर
2. डा. आशा रानी पाण्डेय (संयोजिका– संस्कृत)
   विभागाध्यक्ष (संस्कृत विभाग)
   दयानन्द गर्ल्स पी.जी. कालेज कानपुर

10.15.22

3. प्रो0 गोपबन्धु मिश्र (सदस्य)
कुलपति
सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, सौराष्ट्र

4. प्रो0 भारतेन्दु पाण्डे (सदस्य)
संस्कृत विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय

5. प्रो0 सूर्य नारायण गौतम (सदस्य)
संस्कृत विभाग
एकलव्य विश्वविद्यालय, मध्य प्रदेश

6. डॉ0 अनिल सिन्हा (सदस्य)
विभागाध्यक्ष (संस्कृत विभाग)
डी.ए–वी. कालेज,
कानपुर

7. डॉ0 ओम प्रकाश मिश्र
एसो. प्रोफेसर
संस्कृत विभाग,
वी0एस0एस0डी0 कालेज, कानपुर

8. डॉ0 पुष्पा यादव (सदस्य)
विभागाध्यक्ष संस्कृत विभाग
महिला कालेज,
कानपुर

9. डॉ0 प्रदीप दीक्षित (सदस्य)
संस्कृत विभाग
वी0एस0एस0डी0 कालेज,
कानपुर

10. डॉ0 प्रीति वाधवानी (विशेष आमंत्रित सदस्य)
विभागाध्यक्ष संस्कृत विभाग
तिलक महाविद्यालय,
औरैया

11. डॉ0 शालिनी अग्रवाल (विशेष आमंत्रित सदस्य)
विभागाध्यक्ष (संस्कृत विभाग)
जुहारी देवी गर्ल्स पी0जी0 कालेज
कानपुर

12. डॉ0 मनोरमा आर्या (विशेष आमंत्रित सदस्य)
संस्कृत विभाग
ए0एन0डी0 कालेज
कानपुर

10.15.22

| | | |
|---|---|---|
| 1. | कला संकाय अधिष्ठाता<br>छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय<br>कानपुर | |
| 2. | डा. आशा रानी पाण्डेय (संयोजिका– संस्कृत)<br>विभागाध्यक्ष (संस्कृत विभाग)<br>दयानन्द गर्ल्स पी.जी. कालेज<br>कानपुर | |
| 3. | प्रो0 गोपवन्धु मिश्र (सदस्य)<br>कुलपति<br>सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय | |
| 4. | प्रो0 भारतेन्दु पाण्डे (सदस्य)<br>संस्कृत विभाग<br>दिल्ली विश्वविद्यालय | |
| 5. | प्रो0 सूर्य नारायण गौतम (सदस्य)<br>संस्कृत विभाग<br>एकलव्य विश्वविद्यालय, मध्य प्रदेश | |
| 6. | डॉ0 अनिल सिन्हा (सदस्य)<br>विभागाध्यक्ष (संस्कृत विभाग)<br>डी.ए–वी. कालेज,<br>कानपुर | |
| 7. | डॉ0 पुष्पा यादव (सदस्य)<br>विभागाध्यक्ष संस्कृत विभाग<br>महिला कालेज,<br>कानपुर | |
| 8. | डॉ0 प्रदीप दीक्षित (सदस्य)<br>संस्कृत विभाग<br>वी0एस0एम0डी0 कालेज,<br>कानपुर | |
| 9. | डॉ0 प्रीति वाधवानी (विशेष आमंत्रित सदस्य)<br>विभागाध्यक्ष संस्कृत विभाग<br>तिलक महाविद्यालय,<br>औरैया | |
| 10. | डॉ0 शालिनी अग्रवाल (विशेष आमंत्रित सदस्य)<br>विभागाध्यक्ष (संस्कृत विभाग)<br>जुहारी देवी गर्ल्स पी0जी0 कालेज<br>कानपुर | |
| 11. | डॉ0 मनोरमा आर्या (विशेष आमंत्रित सदस्य)<br>संस्कृत विभाग<br>ए0एन0डी0 कालेज<br>कानपुर | |

10/5/22

| एम० ए० | सेमेस्टर: प्रथम | पूर्णांक: 75 +25 =100 |
|---|---|---|
| विषय : संस्कृत | | |
| प्रश्नपत्र कोड : A020701T | प्रश्नपत्र शीर्षक : वेद प्रतिशाख्य एवं निरुक्त | |
| क्रेडिट : 5 | अनिवार्य प्रश्पत्र (Core) | |

**उद्देश्य :**

- इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य वैदिक साहित्य का व्यापक परिचय देना है | ऋग्वैदिक देवताओं को जानने के लिए एक गहन अध्ययन के साथ छात्र निरुक्त के कुछ अंशों का अध्ययन करेंगे जिससे वैदिक व्युत्पत्ति विज्ञान को समझना सरल हो सकेगा | इसे पढ़कर छात्र वैदिक वांग्मय की कुछ मूलभूत अवधारणाओं की एक बुनियादी समझ के साथ वेदों को बहुमूल्य प्राचीन धरोहर के रूप में समझ सकेंगे |

**निर्धारित पाठ्यक्रम**

प्रथम इकाई - ऋग्वेद सूक्त

वरुण(1.25),सूर्य(1.125),इन्द्र(2.12),उषस्(3.61),नासदीय(10.129)

द्वितीय इकाई - ऋक्प्रातिशाख्य से निम्नलिखित परिभाषाएं -

समानाक्षर संध्यक्षर,अघोष, सोष्म,स्वरभक्ति,यम,संयोग,प्रगृह्य,रक्त,रिफित

तृतीय इकाई - निरुक्त प्रथम अध्याय (सम्पूर्ण)

चतुर्थ इकाई - वैदिक साहित्य का इतिहास

संहिता साहित्य, ब्राह्मण,आरण्यक,उपनिषद् साहित्य, वेदांग साहित्य

**प्रश्नपत्र का प्रारूप तथा अंक विभाजन-**

- प्रथम इकाई से प्रत्येक सूक्त के 5 मन्त्रों का हिन्दी अनुवाद एवं व्याख्या 4×5 = **20**
- किसी एक देवता का परिचय एवं 5×1 = **05**

10/5/22

किसी एक मन्त्र का पदपाठ 5×1 = **05**

- द्वितीय इकाई से 5 परिभाषाएं 5 ×2= **10**
- तृतीय इकाई से 5 मन्त्रों का हिन्दी अनुवाद एवं व्याख्या 4×5 = **20**
- चतुर्थ इकाई से टिप्पणीपरक 5 प्रश्न 3×5 = **15**

कुल अंक = **75**

**आन्तरिक मूल्यांकन :**

- परियोजना **10**
- वस्तुनिष्ठ /लघुत्तरीय परीक्षा **10**
- उपस्थिति एवं अनुशासन **05**

कुल अंक **25**

**मूलग्रन्थ :**


- ऋक्सूक्तसंग्रह - (सम्पादक) हरिदत्तशास्त्री, साहित्यभंडार, मेरठ।
- ऋग्भाष्यसंग्रह-(सम्पादक)देवराजचानना,मुंशीलाल मनोहरलाल पब्लिशर्स दिल्ली, 1983।
- ऋग्वेदसंहिता (सायणभाष्यसहिता),भाग 1 - 4, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली।
- वेदभाष्यभूमिकासंग्रह – बलदेव उपाध्याय, बनारस, 1934.
- ऋग्वेद-प्रातिशाख्यम (अनुवादक)डॉ वीरेन्द्रकुमारवर्मा,चौखम्बाप्रकाशन, नई दिल्ली।
- ऋग्वेदप्रातिशाख्य(उव्वटभाष्य)सिद्धेश्वरभट्टाचार्य,काशीहिन्दूविश्वविद्यालय,वाराणसी
- निरुक्त –डॉ श्रीकान्त पाण्डेय, साहित्यभंडार, मेरठ।
- निरुक्त-यास्क(सम्पादक)प्रो.उमाशंकर,शर्माऋषि,चौखम्बा विद्याभवन,वाराणसी, 2001

- निरुक्तम्(कश्यपप्रजापतिकृत-निघण्टुभाष्यरूपम्), पं. मुकुंद झा बख्शी, , चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली, 2012
- निरुक्त–यास्क, दैवतकाण्ड 7-12, (सम्पादक) सीतारामशास्त्री, परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 1995


**सहायक ग्रन्थ :**


- श्रीअरविन्द - वेदरहस्य, अनुवादक – आचार्य अभयदेव विद्यालंकार एवं जगन्नाथ वेदालंकार,श्री अरविन्द आश्रम, पुदुच्चेरी, 2009.
- उपाध्याय, बलदेव – वैदिक साहित्य और संस्कृति, शारदा संस्थान, वाराणसी।
- उपाध्याय, बलदेव – संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास - प्रथमभाग (वेद) – उत्तरप्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ।
- उपाध्याय, बलदेव – संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास – द्वितीय भाग (वेदांग) – उत्तरप्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ।
- चतुर्वेदी, गिरिधरशर्मा – वैदिक विज्ञान और भारतीय संस्कृति, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पटना, 1972.
- त्रिपाठी, गयाशरण – वैदिक देवता उद्भव और विकास, रास्ट्रीय संस्कृत संस्थान्, नई दिल्ली।
- द्विवेदी, कपिलदेव- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पंचमसंस्करण 2010.

| एम.ए. | सेमेस्टर : प्रथम | पूर्णांक : 75+25=100 |
|---|---|---|
| विषय : संस्कृत | | |
| प्रश्नपत्र कोड : A020702T | प्रश्नपत्र शीर्षक : संस्कृत व्याकरण एवं निबन्ध | |
| क्रेडिट : 5 | अनिवार्य प्रश्नपत्र (CORE) | |

उद्देश्य :

संस्कृत व्याकरण के पाठ्यक्रम का प्रयोजन विद्यार्थियों को संस्कृत विषय की महत्वपूर्ण अवधारणाओं से परिचित कराना है। इसके साथ ही साथ प्राचीन एवं प्रमुख वैयाकरण महर्षि पाणिनी की व्याकरण संरचना, अष्टाध्यायी से अवगत कराना तथा ध्वनि विज्ञान,आकृति विज्ञान और अर्थ विज्ञान से परिचित कराना है जिससे विद्यार्थी शब्दानुशासन की मूल अवधारणा तथा कारक विभक्ति और उनके अनुप्रयोगों को समझने शब्द की प्रकृति, अर्थ तथा उनके सम्बन्धों को समझने में सक्षम हो सकें।

निर्धारित पाठ्यक्रमः–

**प्रथम इकाई–** कारक, विभक्ति प्रकरण सिद्धान्त कौमुदी के अनुसार प्रथमा विभक्ति से चतुर्थी विभक्ति पर्यन्त–सूत्रों की व्याख्या उदाहरण सहित।

**द्वितीय इकाई–** कारक, विभक्ति प्रकरण–सिद्धान्त कौमुदी के अनुसार पंचमी विभक्ति से सप्तमी विभक्ति पर्यन्त – उदाहरण सहित सूत्रों की व्याख्या।

**तृतीय इकाई–** निबन्ध–संस्कृत भाषा में विस्तृत निबन्ध।

**चतुर्थ इकाई–** अपठितांश, अपठितांश से पूछे गये प्रश्नों के उत्तर संस्कृत भाषा में।

प्रश्नपत्र का प्रारूप एवं अंक विभाजनः–

(1) प्रथम इकाई से तीन सूत्रों की व्याख्या उदाहरण सहित – 5X3=15

तीन सूत्रों की विभक्ति निर्धारण सम्बन्धी सूत्र सहित व्याख्या – 5X3=15

(2) द्वितीय इकाई से सूत्र की व्याख्या उदाहरण सहित – 5X3=15

(3) दिये गये 5 विषयों में से एक विषय पर संस्कृत भाषा में निबन्ध – 15X1=15

(4) अपठितांश गद्यांश एवं पद्यांश से प्रश्न – 5X3=15

आन्तरिक मूल्यांकन .....

(1) असाइनमेन्ट ..... ..... 10 अंक

(2) वस्तुनिष्ठ/लघुउत्तरीयपरीक्षा ..... ..... . 10 अंक

(3) उपस्थिति, अनुशासन आदि 05 अंक

कुल अंक 25

संस्कृत ग्रन्थ – पाठ्यक्रम से सम्बन्धित।

(1) सिद्धान्त कौमुदी – कारक प्रकरणम् – आचार्य तारणीश झा

(2) वैयाकरण सिद्धान्त कौमुदी – गोविन्दाचार्य

(3) वैयाकरण सिद्धान्त कौमुदी – श्री बालकृष्ण पंचौली

(4) संस्कृत–व्याकरण में कारक तत्वानुशीलन (पाणिनि तन्त्र के संदर्भ में)
डॉ0 उमाशंकर शर्मा ' ऋषि'

(5) कारक दर्शनम् – डॉ0 कमलनाथ झा

| एम.ए. | सेमेस्टर : प्रथम | पूर्णांक : 75+25=100 |
|---|---|---|
| विषय : संस्कृत | | |
| प्रश्नपत्र कोड : A020703T | प्रश्नपत्र शीर्षक : काव्य एवं नाटक | |
| क्रेडिट : 5 | अनिवार्य प्रश्नपत्र (Core) | |

उद्देश्य :

इस पाठयक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को संस्कृत काव्यों एवं नाटकों के मूलभूत घटक रस, अलंकार, गुण, रीति, कथावस्तु, अभिनेता, नाटकीय विशेषताओं तथा रस आदि जैसे घटकों से परिचित कराना है। इससे विद्यार्थी संस्कृत साहित्य के काव्यकारों एवं नाटककारों के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

निर्धारित पाठयक्रम

प्रथम इकाई – उत्तर रामचरितम्
(प्रथम अंक से चार अंक पर्यन्त)

द्वितीय इकाई – मेघदूतम (पूर्व मेघ)
(1 श्लोक से 50 श्लोक पर्यन्त)

तृतीय इकाई – नलचम्पू (प्रथम उच्छवास)

चतुर्थ इकाई – उपर्युक्त पुस्तकों से टिप्पणीपरक प्रश्न।

## प्रश्नपत्र का प्रारूप एवं अंक विभाजन

(i) प्रथम इकाई से दो श्लोकों की सप्रसंग
हिन्दी व्याख्या 12 x 2 = 24

(ii) द्वितीय इकाई से दो श्लोकों की सप्रसंग
हिन्दी व्याख्या 10 x 2 = 20

| | | | |
|---|---|---|---|
| (iii) | तृतीय इकाई से दो गद्य, पद्य खण्डों की सप्रसंग हिन्दी व्याख्या | 8 x 2 | = 16 |
| (iv) | उपर्युक्त तीनों ग्रंथों मे एक एक टिप्पणीपरक प्रश्न | 5 x 3 | = 15 |
| | कुल अंक | | = **75** |

आन्तरिक मूल्यांकन –

| | | |
|---|---|---|
| (अ) परियोजना | – | 10 |
| (ब) वस्तुनिष्ठ/लघुउत्तरीय परीक्षा | – | 10 |
| (स) छात्र/छात्रा की उपस्थिति एवं अनुशासन | – | 05 |
| कुल अंक | | 25 |

**संस्कृत ग्रंथ –**

(1) नाट्यशास्त्र – बाबूलाल शुक्ल शास्त्री, चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी
(2) उत्तर रामचरितम् – कपिलदेव द्विवेदी – रामनारायण लाल, विजय कुमार इलाहाबाद
(3) उत्तररामचरितम – राम अवध पाण्डेय, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
(4) उत्तर रामचरितम् – डॉ0 शिवबालक द्विवेदी, हंसा प्रकाशन, जयपुर
(5) मेघदूतम – डॉ0 शालिनी अग्रवाल, अभिषेक प्रकाशन, कानपुर
(6) मेघदूतम – दयाशंकर शास्त्री, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
(7) मेघदूतम् – तारिणीश झा, रामनारायण लाल एण्ड कम्पनी, इलाहाबाद
(8) नलचम्पू – डॉ0 रामनाथ वेदालंकार, चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी
(9) महाकवि भवभूति एक समीक्षात्मक अध्ययन – डॉ0 आशारानी पाण्डेय साहित्य निलय, बौद्ध नगर, कानपुर
(10) नलचम्पू – सुरभारती प्रकाशन, बालाजी मार्केट, पी0 रोड कानपुर
(11) नलचम्पू – सुधा , चौखम्भा , अमर भारती प्रकाशन, वाराणसी
(12) महाकवि कालिदास के महाकाव्यों में रसनिरूपण : एक अनुशीलन – डॉ0 प्रदीप कुमार दीक्षित, निखिल प्रकाशन आगरा।

| एम.ए. | सेमेस्टर : प्रथम | पूर्णांक : 75+25=100 |
|---|---|---|
| विषय : संस्कृत | | |
| प्रश्नपत्र कोड : A020704T | प्रश्नपत्र शीर्षक : भारतीय दर्शन | |
| क्रेडिट : 5 | अनिवार्य प्रश्नपत्र (Core) | |

उद्देश्य :

- इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी आस्तिक दर्शनों में से सांख्य, वेदान्त और न्याय के आधारभूत सिद्धान्तों को समझ सकेंगें।
- 'सांख्यकारिका, वेदान्तसार एवं तर्कभाषा, इन पाठयक्रमों के अध्ययन से विद्यार्थियों की तर्कशक्ति एवं आलोचनात्मक दृष्टि का विकास होगा।
- उक्त दर्शनों के सृष्टि– निर्माण, मोक्ष, आत्मा आदि विषयों का तुलनात्मक अध्ययन एवं चिन्तन करने में समर्थ हो सकेंगे।
- उक्त दर्शनों की विशिष्ट तकनीकी एवं पारिभाषिक शब्दावली से विद्यार्थी अवगत हो सकेंगें।
- विद्यार्थियों को वर्तमान काल में भारतीय ज्ञान मीमांसा एवं प्रमाण–मीमांसा में उक्त दर्शनों के अवदान का बोध होगा और सत्य के निर्धारण में इन दर्शनों के अध्ययन से सहायता मिलेगी।

| इकाई | पाठ्य विषय |
|---|---|
| 1. | सांख्यकारिका – ईश्वरकृष्ण (1 – 40) |
| 2. | वेदान्तसार – सदानन्द :–<br>अनुबन्ध–चतुष्टय, आत्मा विवेचन, अज्ञान |

| | |
|---|---|
| 3. | विवेचन, ईश्वर , जीवन विवेचन, जीवन और ईश्वर का सम्बन्ध<br>वेदान्तसार – सदानन्द :–<br>अध्यारोप तथा सृष्टि प्रक्रिया, महावाक्य विवेचन, समाधि विवेचन, बंधन तथा मोक्ष |
| 4. | तर्कभाषा – केशवमिश्र :–<br>(अर्थापत्ति प्रमाण पर्यन्त) |

## प्रश्नपत्र का प्रारूप एवं अंक विभाजन

| | | | |
|---|---|---|---|
| (i) | प्रथम इसाहिकाई से दो व्याख्या | 8 x 2 | = 16 |
| (ii) | द्वितीय इकाई से दो व्याख्या | 6 x 2 | = 12 |
| (iii) | तृतीय इकाई से दो व्याख्या | 6 x 2 | = 12 |
| (iv) | चतुर्थ इकाई से दो व्याख्या | 7½ x 2 | = 15 |
| (v) | तीनों ग्रंथो से समीक्षात्मक एवं विस्तृत उत्तरीय प्रश्न | 7+7+6 | = 20 |
| | | | = **75** |

सतत मूल्यांकन :– कुल अंक = 25

(अ) पाठयक्रम में निर्धारित ग्रंथों पर आधारित अधिन्यास (असाइनमेन्ट) एवं उपस्थिति, अनुशासन एवं आचरण 10 + 5 = 15

(ब) लिखित परीक्षा (वस्तुनिष्ठ/लघु उत्तरीय) 10

संस्तुत ग्रंथ :–

1. सांख्यकारिका – ईश्वरकृष्ण, व्याख्याकार – डॉ0 दयाशंकर शास्त्री, साहित्यनिकेतन, कानपुर ।
2. सांख्यकारिका – ईश्वरकृष्ण , व्याख्याकार – डॉ0 आद्या प्रसाद मिश्र, प्रयागराज।
3. सांख्यकारिका – ईश्वरकृष्ण , व्याख्याकार – डॉ0 हरिदत्त शास्त्री, साहित्य भण्डार, मेरठ ।
4. वेदान्तसार – सदानन्द, व्याख्याकार सन्तनारायण श्रीवास्तव्य, पीयूष प्रकाशन, प्रयागराज ।
5. वेदान्तसार – सदानन्द, हिन्दी व्याख्या और टिप्पणी – पं0 बद्रीनाथ शुक्ल, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
6. वेदान्तसार – सदानन्द, हिन्दी व्याख्या और टिप्पणी – पं0 गजानन शास्त्री मुसलगाँवकर ।
7. वेदान्तसार – सदानन्द, व्याख्याकार आचार्य राममूर्ति शर्मा, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली।
8. तर्कभाषा, केशव मिश्र, हिन्दी व्याख्या पं0 विश्वेश्वर सिद्धान्त – शिरोमणि, चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी।
9. तर्कभाषा – केशवमिश्र, व्याख्याकार आचार्य बद्रीनाथ शुक्ल, मोतीलाल बनारसीदास , वाराणसी ।
10. तर्कभाषा – केशवमिश्र, व्याख्याकार श्रीनिवास शास्त्री, साहित्य भण्डार, मेरठ।

सहायक ग्रंथ :–

1. सांख्यदर्शन का इतिहास – उदयवीर शास्त्री, विरजानन्द वैदिक संस्थान, ज्वालापुर ।
2. भारतीय दर्शन – बलदेव उपाध्याय, वाराणसी ।
3. भारतीय दर्शन – उमेश मिश्र, हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
4. Indian Philosophy Radhakrishnan S, Oxford University Press, Delhi.
5. History of Indian Philosophy, Dasgupta S.N., Motilal Banarasidas, Delhi

| एम.ए. | सेमेस्टर : द्वितीय | पूर्णांक : 75+25=100 |
|---|---|---|
| विषय : संस्कृत | | |
| प्रश्नपत्र कोड : A020801T | प्रश्नपत्र शीर्षक : काव्यशास्त्र - I | |
| क्रेडिट : 5 | अनिवार्य प्रश्नपत्र (Core) | |

उद्देश्य:

- इस पाठयक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा में निबद्ध काव्य तथा काव्य के प्रकार, गुण, दोष, रस, अलंकार, रीति आदि विविध आयामों से परिचित कराना है। पाठयक्रम के अध्ययन से काव्य की मुख्य विशेषताओं, शब्द शक्तियो, सम्प्रदायों आदि का भी ज्ञान विद्यार्थियों को होगा तथा वे साहित्यिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक मूल्यों से भी सुपरिचित हो सकेंगें। इसके अतिरिक्त वे ध्वनि की मौलिक शब्दावली को समझनें में भी समर्थ होंगे।

निर्धारित पाठयक्रम

प्रथम इकाई – काव्य प्रकाश – प्रथम उल्लास

द्वितीय इकाई – काव्य प्रकाश – द्वितीय उल्लास

तृतीय इकाई – काव्य प्रकाश – तृतीय एवं चतुर्थ उल्लास

चतुर्थ इकाई – (अ) ध्वन्यालोक – प्रथम उद्योत

**प्रश्नपत्र का प्रारूप तथा अंक विभाजन –**

(1) प्रथम इकाई से दो कारिकाओं की सप्रसंग हिन्दी व्याख्या – 8 x 2 = 16

(2) द्वितीय इकाई से दो कारिकाओं की सप्रसंग हिन्दी व्याख्या – 8 x 2 = 16

(3) तृतीय इकाई से दो कारिकाओं की सप्रसंग हिन्दी व्याख्या – 6 x 2 = 12

(4) चतुर्थ इकाई के 'अ' से दो कारिकाओं की सप्रसंग हिन्दी व्याख्या– 8 x 2 = 16

(5) चतुर्थ इकाई के 'ब' भाग से तीन टिप्पणीपरक समीक्षात्मक प्रश्न – 5 x 3 = 15

कुल अंक – 75

## आंतरिक मूल्यांकन

(अ) परियोजना – 10

(ब) वस्तुनिष्ठ /लघुउत्तरीय प्रश्न – 10

(स) उपस्थिति एवं अनुशासन – 05

कुल अंक – 25

## संस्कृत ग्रन्थ :


(1) काव्यप्रकाश – मम्मट – व्याख्याकार – आचार्य विश्वेश्वर, ज्ञानमंडल लिमिटेड वाराणसी।

(2) काव्यप्रकाश – मम्मट – बालबोधिनी टीका (झलकीकर), पूना संस्करण

(3) काव्यप्रकाश – मम्मट – टीका सत्यव्रत सिंह , चौखम्भा वाराणसी

(4) काव्यप्रकाश – मम्मट – पारसनाथ द्विवेदी , विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

(5) काव्यप्रकाश – मम्मट – सीताराम क्षेतोलिया, हंसा प्रकाशन, जयपुर

(6) काव्यप्रकाश – मम्मट – श्रीनिवास शास्त्री, साहित्य भंडार,

(7) संस्कृत चिन्तन परम्परा में लक्षणा विमर्श – डॉ0 अनिल कुमार सिन्हा, आस्था प्रकाशन, भजनपुरा, दिल्ली

(8) ध्वन्यालोक – आनन्दवर्धनाचार्य – आचार्य विश्वेश्वर, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी

(9) ध्वन्यालोक – आनन्दवर्धनाचार्य – चण्डिकाप्रसाद शुक्ल – विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

(10) ध्वन्यालोक – आनन्दवर्धनाचार्य – डॉ0 रामसागर त्रिपाठी, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।

(11) संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास – पी0वी. काणे हिन्दी अनुवाद , मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी

(12) ध्वन्यालोक – आनन्दवर्धनाचार्य – जगन्नाथ पाठक, चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी

| एम.ए. | सेमेस्टर : द्वितीय | पूर्णांक : 75+25=100 |
|---|---|---|
| विषय : संस्कृत | | |
| प्रश्नपत्र कोड : A020802T | प्रश्नपत्र शीर्षक : संस्कृत व्याकरण एवं भाषा विज्ञान | |
| क्रेडिट : 5 | अनिवार्य प्रश्नपत्र (CORE) | |

उद्देश्य :

इस पाठ्यक्रम का मूल उद्देश्य संस्कृत के विद्यार्थियों को लघु सिद्धान्त कौमुदी के अनुसार समास एवं स्त्रीप्रत्यय का विस्तार से अध्ययन कराना है। इससे भाषा विज्ञान के अंतर्गत भाषा के वर्गीकरण, ध्वनियों का वर्गीकरण तथा विभिन्न नियमों का ज्ञान भी छात्रों को प्राप्त हो सकेगा।

निर्धारित पाठ्यक्रम–

**प्रथम इकाई–** समास–लघुसिद्धान्तकौमुदी के अनुसार समास की परिभाषा एवं भेद उदाहरण सहित।

(1) केवल समास

(2) अव्ययी भाव समास

**द्वितीय इकाई–** समास–लघु सिद्धान्त कौमुदी के अनुसार समास

(1) तत्पुरुष समास

(2) बहुब्रीहि समास

(3) द्वन्द्व समास

**तृतीय इकाई–** स्त्री प्रत्यय–सिद्धान्त कौमुदी के अनुसाररूप सिद्धि एवं व्याख्या।

(i) चाप् (ii) ङीप् (iii) ङीष् (iv) ङीन (v) ऊङ् (vi) ति।

चतुर्थ इकाई–भाषा विज्ञान

(i) भाषा का वर्गीकरण (आकृतिमूलक एवं पारिवारिक)

(ii) ध्वनियों का वर्गीकरण

(iii) ध्वनि नियम

**प्रश्नपत्र का प्रारूप एवं अंक विभाजनः–**

(1) प्रथम इकाई से दो सिद्धि प्रक्रिया एवं दो सूत्र व्याख्या – 5X4=20

(2) द्वितीय इकाई से दो सिद्धि प्रक्रिया एवं दो सूत्र व्याख्या – 5X4=20

(3) तृतीय इकाई से दो रूप सिद्धि एवं दो सूत्र व्याख्या – 5X4=20

(4) चतुर्थ इकाई से प्रश्न – 5X3=15

आन्तरिक मूल्यांकन .....

(1) असाइनमेन्ट ..... ..... 10 अंक
(2) वस्तुनिष्ठ/लघुउत्तरीय प्रश्न ..... .....10 अंक
(3) उपस्थिति, अनुशासन आदि 05 अंक

कुल अंक 25

**संस्तुत ग्रन्थ–**

(1) लघु सिद्धान्त कौमुदी– श्री धरानन्द शास्त्री
(2) लघु सिद्धान्त कौमुदी– भीमसेन शास्त्री
(3) भाषा विज्ञान – डॉ0 कर्ण सिंह
(4) भाषा विज्ञान– भोलानाथ तिवारी
(5) भाषा विज्ञान एवं भाषा शास्त्र–डा0 कपिल देव द्विवेदी
(6) भाषा विज्ञान–टी0एन0 बरो
(7) लघु सिद्धान्त कौमुदी (समास एवं विभक्त्यर्थ प्रकरण)–डा0 प्रदीप कुमार दीक्षित, डा0 नीलम दीक्षित

| एम.ए. | सेमेस्टर : द्वितीय | पूर्णांक : 75+25=100 |
|---|---|---|
| विषय : संस्कृत | | |
| प्रश्नपत्र कोड :<br>A020803T | प्रश्नपत्र शीर्षक :<br>भारतीय संस्कृति एवं ज्ञान–विज्ञान परम्परा | |
| क्रेडिट : 5 | अनिवार्य प्रश्नपत्र | |

उद्देश्य :

- इस पाठयक्रम का उद्देश्य एक ओर विद्यार्थियों को भारत की प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति के विधि पक्षों से परिचित कराना है, वहीं दूसरी ओर प्राचीन मनीषियों एवं वैज्ञानिकों के ज्ञान–विज्ञान से सम्बन्धित संक्षित जानकारी उपलब्ध कराना है।
- विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम से प्राचीन ज्ञान–विज्ञान के लौकिक विषयों के अन्तर्गत भूगोल, ज्योतिष, औषधिशास्त्र, भौतिकशास्त्र, भूगर्भविज्ञान, रसायन, तर्क, धनुर्विद्या, शिल्पविद्या आदि का सामान्य परिचय प्राप्त कर सकेंगें।
- इससे विद्यार्थियों को प्राचीन उन्नत आध्यात्मिक ज्ञान का भी अवबोध हो सकेगा।
- नई शिक्षानीति 2020 में भी यह विचार समाहित है कि विद्यार्थी में विद्यार्जन के साथ साथ स्वावलम्बन, करूणा, मैत्री, राष्ट्रप्रेम की भावना भी विकसित हो और 'सा विद्या या विमुक्तये' यह जीवनलक्ष्य भी प्राप्त हो, यह पाठयक्रम इसी लक्ष्य को दृष्टिगत रखकर तैयार किया गया है।

| इकाई | पाठ्यविषय |
|---|---|
| 1. | संस्कृति की परिभाषा एवं स्वरूप, प्राचीन भारतीय संस्कृति के मूल तत्व, वैदिक एवं उत्तरवैदिककालीन सभ्यता एवं संस्कृति (सामाजिक, आर्थिक , राजनैतिक एवं धार्मिक स्थितियों के संदर्भ में), रामायण तथा महाभारत में वर्णित भारतीय संस्कृति (सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक एवं आर्थिक स्थितियों के संदर्भ में) |
| 2. | वर्णव्यवस्था, आश्रमव्यवस्था, पुरूषार्थचतुष्टय, षोडशसंस्कार, प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली एवं शिक्षा के प्रमुख केन्द्र |
| 3. | यज्ञ, यज्ञ के प्रकार, यज्ञ का आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक महत्व, यज्ञवेदियाँ, यज्ञधूम एवं मेघ निर्माण, यज्ञ का रेखागणितीय महत्व |
| 4. | प्राचीन भारतीय शिल्पविज्ञान, शालानिर्माणादि नगर एवं भवन निर्माण कला, देवमन्दिर, शिल्प एवं उद्योग, शिल्प एवं यंत्र |

## प्रश्नपत्र का प्रारूप एवं अंक–विभाजन

| | | | |
|---|---|---|---|
| (i) | प्रथम इकाई से दो प्रश्न | 7 ½ x 2 | = 15 |
| (ii) | द्वितीय इकाई से दो प्रश्न | 10 x 2 | = 20 |
| (iii) | तृतीय इकाई से दो प्रश्न | 10 x 2 | = 20 |
| (iv) | चतुर्थ इकाई से दो प्रश्न | 10 x 2 | = 20 |
| | | | = **75** |

**नोट** :विश्लेषणात्मक एवं आलोचनात्मक विस्तृत उत्तरीय प्रश्न प्रत्येक इकाई से करना अनिवार्य होगा। प्रत्येक इकाई से तीन प्रश्न होंगें, जिसमें से दो का चयन कर विद्यार्थी को उत्तर देना होगा।

सतत मूल्यांकन :–

(1) पाठ्यक्रम में निर्धारित ग्रंथों पर आधारित अधिन्यास (असाइनमेन्ट)

एवं

उपस्थिति, अनुशासन एवं आचरण 10 + 5 = 15

(ब) लिखित परीक्षा (वस्तुनिष्ठ/लघुउत्तरीय) 10

संस्तुत ग्रंथ :–


(1) बलदेव उपाध्याय, वैदिक साहित्य और संस्कृति, शारदा मन्दिर, वाराणसी।

(2) डी.डी. कौशाम्बी, प्राचीन भारत की संस्कृति और सभ्यता, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

(3) प्रीतिप्रभा गोयल, भारतीय संस्कृति, राजस्थान ग्रंथागार, जयपुर

(4) रामजी उपाध्याय, भारतस्य सांस्कृतिक निधिः, चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली

(5) Altekar, A.S. – 'Eduation in Ancient India', Delhi

(6) पं0 रघुनन्दन शर्मा, वैदिक सम्पत्ति आध्यात्मिक शोध संस्थान, दिल्ली


सहायक ग्रंथ


(1) राजवली पाण्डेय, हिन्दू संस्कार, चौखम्भा, दिल्ली

(2) रामधारी सिंह दिनकर, संस्कृति के चार अध्याय, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज

(3) ए.एल. बाशम, अदभुत भारत, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा

(4) राजकिशोर सिंह, भारतीय संस्कृति, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

(5) 'संस्कार विधि' – स्वामी दयानन्द सरस्वती, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली

| एम० ए० | सेमेस्टर: द्वितीय | पूर्णांक: 75 +25 =100 |
|---|---|---|
| विषय : संस्कृत | | |
| प्रश्नपत्र कोड : A020804T | प्रश्नपत्र शीर्षक: आर्षकाव्य | |
| क्रेडिट : 5 | वैकल्पिक प्रश्पत्र (Elective) | |

**उद्देश्य :**

- इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य रामायण व महाभारत महाकाव्यों में संरक्षित भारत की विरासत का सांस्कृतिक, ऐतिहासिक,भौगोलिक,राजनैतिक,सामाजिक व आर्थिक मूल्यों का सम्पूर्ण चित्रण प्रस्तुत करना है | प्रस्तुत महाकाव्यों के व्यक्तिगत पात्रों के माध्यम से छात्र व्यावहारिक व नैतिक मूल्यों को जान सकेंगे |

**निर्धारित पाठ्यक्रम :**

प्रथम इकाई - रामायण की विषयवस्तु तथा काल

रामायण- अरण्यकाण्ड सर्ग -16 ( हेमन्तवर्णन )

द्वितीय इकाई - रामायण- सुन्दरकांड(4 से 7 सर्ग)

तृतीय इकाई - महाभारत की विषयवस्तु तथा काल

महाभारत – वनपर्व –यक्ष युधिष्ठिर सम्वाद

चतुर्थ इकाई - महाभारत –शांतिपर्व – युधिष्ठिर भीष्म सम्वाद

**प्रश्नपत्र का प्रारूप एवं अंक विभाजन**

- प्रत्येक इकाई से 4 व्याख्या 4 ×7 = **28**
- प्रत्येक इकाई से 8 टिप्पणी 8 ×4 = **32**

- 15 सामान्य प्रश्न प्रत्येक इकाई से 15×1 = **15**

कुल अंक = **75**

**आन्तरिक मूल्यांकन :**

- परियोजना **10**
- वस्तुनिष्ठ /लघुत्तरीय परीक्षा **10**
- उपस्थिति एवं अनुशासन **05**

कुल अंक **25**

**मूलग्रन्थ :**

- साहित्यरत्नकोश, भाग -2, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली
- पुराणेतिहाससंग्रहः, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 1959
- आदिकवि वाल्मीकि- राधावल्लभ त्रिपाठी,संस्कृत परिषद्,विश्वविद्यालय,सागर
- महाभारत- श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, स्वाध्याय मंडल पारडी
- Mahabharata, Critical Edition, BORI, Poona
- Mahabharata Text, pub. Gita Press, Gorakhpur
- Ramayana with Hindi trans., Gita Press, Gorakhpur

**सहायक ग्रन्थ :**

- संस्कृत साहित्य का इतिहास –बलदेव उपाध्याय,शारदा संस्थान,वाराणसी
- संस्कृत साहित्य का इतिहास- वाचस्पति गैरोला,चौखाम्बा विद्याभवन वाराणसी
- रामराज्य का भारतीय आदर्श –डॉ आशा रानी पाण्डेय, निखिल प्रकाशन,आगरा

- Hopkins, E.W., The Great Epic of India, Reprinted by Punthi Push taka, Calcutta, 1969
- Ramayana with four commentaries by Govindaraja & others, Lakshmi Venkateswara Press, Bombay, 1935
- Ramayana ed. by Chinnaswami Sastrigal and V.H. Subramanian Shastri, Pub. by N. Ramaratham, Madras, 1958
- Mahabharata with Neelakantha's Commentary, Chirtasala Press, Poona, 1929-33

| एम० ए० | सेमेस्टर: द्वितीय | पूर्णांक: 75 +25 =100 |
|---|---|---|
| विषय : संस्कृत | | |
| प्रश्नपत्र कोड : A020805T | प्रश्नपत्र शीर्षक: धर्मशास्त्र एवं अर्थशास्त्र | |
| क्रेडिट : 5 | वैकल्पिक प्रश्पत्र (Elective) | |

**उद्देश्य :**

- यह पाठ्यक्रम छात्र को प्राचीन भारतीय धार्मिक, राजनीतिक व क़ानूनी समझ प्रदान करता है | छात्र अर्थशास्त्र में वर्णित नीति व कानून के विभिन्न प्रावधानों को समझते हुए प्राचीन भारतीय प्रशासनिक व्यवस्था की तुलना वर्तमान से कर सकेंगे |

**निर्धारित पाठ्यक्रम :**

प्रथम इकाई - मनुस्मृति का सामान्य परिचय

मनुस्मृति अध्याय 7 (श्लोक 1 – 100)

द्वितीय इकाई - मनुस्मृति अध्याय 7 (श्लोक 101 से अन्त पर्यन्त )

तृतीय इकाई - याज्ञवल्क्य स्मृति का सामान्य परिचय

याज्ञवल्क्य स्मृति- व्यवहार अध्याय ( दायभाग प्रकरण )

चतुर्थ इकाई - कौटिल्य अर्थशास्त्र का सामान्य परिचय

कौटिल्य अर्थशास्त्र प्रथम अधिकरण

**प्रश्नपत्र का प्रारूप एवं अंक विभाजन :**

- प्रत्येक इकाई से 8 हिंदी अनुवाद एवं व्याख्या 8 ×5 = **40**
- प्रत्येक इकाई से 8 टिपण्णी 8 ×3 = **24**

- 11 सामान्य प्रश्न 11×1 = 11

कुल अंक = 75

**आन्तरिक मूल्यांकन :**

- परियोजना 10
- वस्तुनिष्ठ /लघुत्तरीय परीक्षा 10
- उपस्थिति एवं अनुशासन 05

कुल अंक 25

**मूलग्रन्थ :**

- मनुस्मृति, कुल्लूकभट्ट टीकासहित, (सं.) शिवराज,आचार्य विद्याभवन, वाराणसी।
- मनुस्मृति- मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
- मनुस्मृति-(सम्पादक),प्रवीण प्रलयंकर,न्यू भारतीय कार्पोरेशन,दिल्ली
- मनुस्मृति , कुल्लूकभट्ट टीकासहित, (सं.) हरगोविन्द शास्त्री, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली।
- याज्ञवल्क्यस्मृति , मिताक्षराख्यटीका सहित, सम्पादक डॉ. गंगासागर राय, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली।
- कौटिल्य अर्थशास्त्र – हिन्दी व्याख्यासहित, वाचस्पति गैरोला, वाराणसी।
- कौटिल्य अर्थशास्त्र – संस्कृत टीका सहित, संपादक–टी. गणपतिशास्त्री, त्रिवेन्द्रम्।

**सहायक ग्रन्थ :**

- Kane, P.V. - History of Dharma,,Ėstra, Vol. I, BORI, Poona

- Sen, P.V.- Hindu Jurisprudence
- Varadachariar, S. - Hindu Judicial System
- Chaudhary, R.K. - Kantilla's Political Ideas and Institutions, Chaukhamba S. Series, Varanasi, 1971
- Mehta, U. and Thakkar, U. - Kantilla and His Arthaśāstra, S. Chand Publication, Delhi, 1980

| एम.ए. | सेमेस्टर : द्वितीय | पूर्णांक : 75+25=100 |
|---|---|---|
| विषय : संस्कृत | | |
| प्रश्नपत्र कोडः<br>A020806T | चतुर्थ प्रश्नपत्र शीर्षक :<br>पर्यावरण विज्ञान और वैदिक साहित्य | |
| क्रेडिट : 5 | वैकल्पिक प्रश्नपत्र (Elective) | |

उद्देश्य :

- वर्तमान में पर्यावरण की असंतुलित स्थिति को देखते हुये, विद्यार्थियों के लिए पर्यावरण विज्ञान एवं वैदिक साहित्य का अध्ययन आवश्यक है।
- वैदिक साहित्य में निहित प्राकृतिक तत्वों के स्वरूप का सामान्य अध्ययन कर सकेंगें।
- पर्यावरण प्रदूषण एवं उसके निराकरण के विषय में विस्तृत जानकारी प्राप्त करेंगें।
- वैदिक ऋषियों के पर्यावरण शुद्धिकरण के दृष्टिकोण से सुपरिचित होंगें।
- इस अध्ययन से छात्र–छात्राओं में प्रकृति के प्रति प्रेम तथा वृक्ष वनस्पतियों के संरक्षण की भावना उत्पन्न होगी।

निर्धारित पाठयक्रम –

| इकाई | पाठ्यविषय |
|---|---|
| 1. | पर्यावरण का शब्दकोषीय अर्थ एवं परिभाषायें, पर्यावरण का स्वरूप, पंचतत्वों का सामान्य अध्ययन प्रकृति और मानव सम्बन्ध। |
| 2. | अन्तरिक्ष एवं द्युस्थानीय तत्व – इन्द्र, मरूत, पर्जन्य, सूर्य, मित्र |

| | |
|---|---|
| | पूषन् एवं वरूण का संक्षिप्त परिचय तथा पर्यावरणीय भूमिका |
| 3. | पृथ्वी स्थानीय तत्व – अग्नि, सोम, उषस्, द्यावा आदि का संक्षिप्त परिचय |
| 4. | पर्यावरण प्रदूषण के प्रकार, पर्यावरण संरक्षण के विविध उपाय, पर्यावरण संरक्षण में यज्ञ की भूमिका । |

## प्रश्नपत्र का प्रारूप एवं अंक–विभाजन

| | | | |
|---|---|---|---|
| (i) | प्रथम इकाई से दो प्रश्न | 8 x 2 | = 16 |
| (ii) | द्वितीय इकाई से तीन प्रश्न | 8 x 3 | = 24 |
| (iii) | तृतीय इकाई से पांच लघु प्रश्न | 3 x 5 | = 15 |
| (iv) | चतुर्थ इकाई से दो विस्तृत उत्तरीय प्रश्न | 10 x 2 | = 20 |
| | | | = **75** |

सतत मूल्यांकन :–

(अ) पाठ्यक्रम में निर्धारित ग्रंथों पर आधारित अधिन्यास (असाइनमेन्ट) एवं उपस्थिति, अनुशासन एवं आचरण। 10 + 5 = 15

(ब) लिखित परीक्षा (वस्तुनिष्ठ /लघुउत्तरीय) = 10

## सहायक ग्रंथ


1. भारतीय संस्कृति में पर्यावरण के विविध आयाम, डॉ0 वीरेन्द्र सिंह यादव - प्रकाशक– ओमेगा पब्लिकेशन्स , 4378/4बी, जी–4, जे.एम.डी. हाउस, मुरारीलाल स्ट्रीट, दरियागंज, नई दिल्ली – 110002
2. पर्यावरण विज्ञान और अर्वाचीन संस्कृत महाकाव्य, डॉ0 मुरारीलाल अग्रवाल प्रकाशक– निखिल पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रिब्यूटर्स, 37 'शिवराम कृपा' विष्णु कालोनी, शाहगंज, आगरा – 10
3. वेदों में पर्यावरण विज्ञान – डॉ0 चन्द्रशेखर लोखण्डे (शास्त्री), प्रकाशक – श्री घूडमल प्रहलादकमार आर्य धर्मार्थ ट्रस्ट, हिण्डौन सिटी (राजस्थान) –

4. आधुनिक जीवन और पर्यावरण, दामोदर शर्मा एवं हरीश व्यास,

प्रकाशक – प्रभात प्रकाशन , 4/19 आसिफ अली रोड, नई दिल्ली

5. पर्यावरण शिक्षा – डॉ0 राजेश दुबे , प्रकाशक – प्रकृति भारती , लखनऊ (उ0प्र0)

6. संस्कृत में विज्ञान एवं वैज्ञानिक तत्व, सम्पादक प्रो. हरिदत्त शर्मा, प्रकाशक – इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज।

7. पर्यावरण और संस्कृतवांग्मय – डॉ0 मुरारीलाल अग्रवाल

8. संस्कृतसाहित्ये जलविज्ञानम्, नाग प्रकाशक, दिल्ली

9. भारतीय दर्शनों में सम्बन्ध विमर्श, प्रतिभा प्रकाशन, नई दिल्ली।

10. मेधामन्थः, डॉ0 नवलता , आशियाना, लखनऊ

| एम.ए. | सेमेस्टर : तृतीय | पूर्णांक : 75+25=100 |
|---|---|---|
| विषय : संस्कृत | | |
| प्रश्नपत्र कोड : A020901T | प्रश्नपत्र शीर्षक : काव्यशास्त्र -II | |
| क्रेडिट : 5 | अनिवार्य प्रश्नपत्र (Core) | |

## उद्देश्य :

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को संस्कृत के कवियों, समीक्षकों एवं काव्यविदों का परिचय कराना है। काव्य के मूल तत्वों की विवेचना एवं तत्सम्बद्ध सामान्य रस दोष तथा अलंकारों का भी ज्ञान कराना है। पाठ्यक्रम के पूर्ण अध्ययन के पश्चात विद्यार्थियों में काव्य को समझने की परख का विकास होगा तथा वे काव्य के दोषों, गुणों, अलंकारों को समझने में सक्षम हो सकेंगे।

## निर्धारित पाठ्यक्रम

प्रथम इकाई – सप्तम उल्लास – कारिका 82 से लेकर अन्तिम कारिका तक

द्वितीय इकाई – अष्टम एवं नवम् उल्लास

तृतीय इकाई – दशम् उल्लास – अलंकारों के लक्षण, उदाहरण एवं भेद – उपमा व उसके भेद, रूपक अप्रस्तुतप्रशंसा , अपह्नुति, दीपक, तुल्ययोगिता, दृष्टान्त, यमक, चित्रालंकार, श्लेष, अनुप्रास, संकट, विनोक्ति, विशेषोक्ति, स्वभावोंक्ति, विभावना, एकावली, संसृष्टि, भ्रान्तिमान, पर्यायोक्ति, परिसंख्या, उत्प्रेक्षा, सन्देह

चतुर्थ इकाई – समीक्षात्मक प्रश्न

## प्रश्नपत्र का प्रारूप एवं अंक विभाजन

| | | | |
|---|---|---|---|
| (i) | प्रथम इकाई से दो कारिकाओं की व्याख्या | 5 x 2 | = 10 |
| | 1 दीर्घ प्रश्न | 5 x 1 | = 5 |
| | पारिभाषिक शब्दों पर टिप्पणी | 2½ x 2 | = 5 |
| (ii) | द्वितीय इकाई से दो कारिकाओं की व्याख्या | 5 x 2 | = 10 |
| | 1 दीर्घ प्रश्न | 5 x 1 | = 5 |
| | पारिभाषिक शब्दों पर टिप्पणी | 2½ x 2 | = 5 |
| (iii) | तृतीय इकाई से दो श्लोंकों की व्याख्या | 7 x 2 | = 14 |
| | दीर्घ प्रश्न (नाटककार से सम्बन्धित) | 6 x 1 | = 6 |
| (iv) | चतुर्थ इकाई से दो श्लोंकों की व्याख्या | 5 x 2 | = 10 |
| | दीर्घ प्रश्न | 5 x 1 | = 5 |
| | कुल अंक | | = **75** |

आन्तरिक मूल्यांकन –

| | | |
|---|---|---|
| (अ) परियोजना | – | 10 |
| (ब) वस्तुनिष्ठ परीक्षा | – | 10 |
| (स) छात्र/छात्रा की उपस्थिति एवं अनुशासन | – | 05 |
| कुल अंक | | 25 |

संस्कृत ग्रंथ –


(1) काव्यप्रकाश – श्री निवास शास्त्री, साहित्य भंडार, मेरठ

(2) काव्यप्रकाश – आचार्य विश्वेश्वर , ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी

(3) काव्यप्रकाश – सत्यव्रत सिंह, चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी

(4) काव्यप्रकाश – पारसनाथ द्विवेदी , विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

(5) काव्य प्रकाश – सीताराम दोतोलिया , हंसा प्रकाशन, जयपुर

(6) संस्कृत काव्य शास्त्र का इतिहास – पी0वी0 काणे, हिन्दी अनु0 मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी

(7) काव्य प्रकाश – बालबोधिनी टीका (झलकीकर) पूना संस्करण

| एम.ए. | सेमेस्टर : तृतीय | पूर्णांक : 75+25=100 |
|---|---|---|
| विषय : संस्कृत | | |
| प्रश्नपत्र कोड : A020902T | प्रश्नपत्र शीर्षक : संस्कृत व्याकरण | |
| क्रेडिट : 5 | अनिवार्य प्रश्नपत्र (CORE) | |

उद्देश्य :

संस्कृत व्याकरण के पाठ्यक्रम का प्रयोजन विद्यार्थियों को संस्कृत विषय के तद्धित प्रकरण की विस्तृत जानकारी उपलब्ध कराना है। इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से विद्यार्थी महाभाष्य के विषय में उपयोगी जानकारी प्राप्त कर सकेंगे तथा संस्कृत व्याकरण के इतिहास के सम्बन्ध में भी ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

निर्धारित पाठ्यक्रमः–

**प्रथम इकाई**– महाभाष्य पस्पशाह्निकम्

(प्रारम्भ से शब्दार्थ सम्बन्ध पूर्व गद्य पर्यन्त व्याख्यात्मक अध्ययन)।

**द्वितीय इकाई**–तद्धित प्रकरण

लघु सिद्धान्त कौमुदी के अनुसार

(1) मत्वर्थीया :।

(2) उञधिकार :।

(3) प्राग्दीव्यतीया :।

(4) यदधिकार :।

**तृतीय इकाई**– संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास

**चतुर्थ इकाई**– अनुवाद

(हिन्दी से संस्कृत भाषा में अनुवाद तथा संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद)।

**प्रश्नपत्र का प्रारूप एवं अंक विभाजनः–**

(1) प्रथम इकाई से तीन व्याख्या – 5X3=15

एवं

दो टिप्पणीपरक सामान्य प्रश्न – 5X2=10

(2) द्वितीय इकाई से तीन रूप सिद्धि – 4X3=12

एवं

दो सूत्र की व्याख्या – 4X2=8

(3) तृतीय इकाई से चार टिप्पणीपरक प्रश्न – 5X4=20

(4) चतुर्थ इकाई से हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद – 10X1=10

आन्तरिक मूल्यांकन .....

(1) असाइनमेन्ट ..... ..... 10 अंक

(2) वस्तुनिष्ठ/लघुउत्तरीय परीक्षा ..... .....10 अंक

(3) उपस्थिति, अनुशासन आदि 05 अंक

कुल अंक 25

**संस्तुत ग्रन्थ–**

1. महाभाष्य (पस्पशाह्निकम्) – डॉ0 राज किशार मणि त्रिपाठी
2. महाभाष्य (नवाह्निकम्) – पं0 युधिष्ठर मीमांसक
3. लघु सिद्धान्त कौमुदी – गोविन्द प्रसाद शर्मा
4. शीघ्रबोध व्याकरणम – डॉ0 (श्रीमती) पुष्पा दीक्षित
5. रचना अनुवाद कौमुदी – डॉ0 कपिल देव द्विवदी

| एम० ए० | सेमेस्टर: तृतीय | पूर्णांक: 75 +25 =100 |
|---|---|---|
| विषय : संस्कृत | | |
| प्रश्नपत्र कोड : A020903T | प्रश्नपत्र शीर्षक :वैदिक साहित्य एवं शिक्षा | |
| क्रेडिट : 5 | वैकल्पिक प्रश्पत्र (Elective) | |

**उद्देश्य :**

- इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य सूक्तों के माध्यम से मुख्यतः ऋग्वेद व अथर्ववेद के मूलतत्व को समझना है | पाणिनीय शिक्षा में वर्णित वर्णोच्चारण सम्बन्धी नियमों व वैदिक छंदों से परिचित होकर महर्षि पाणिनि की वैज्ञानिकता को समझना है |

**निर्धारित पाठ्यक्रम**

प्रथम इकाई - ऋग्वेद सूक्त – अक्ष (10.34), ज्ञान (10.71), पर्जन्य (5.83)

अथर्ववेद सूक्त – राष्ट्राभिवर्धनम् (1.29), काल (10.53)

द्वितीय इकाई - ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका (सायणभाष्य)

ऋग्वेद की श्रेष्ठता, यजुर्वेद के प्रथम व्याख्यान का कारण, वेदों का अस्तित्व, वेदार्थज्ञान का महत्व

तृतीय इकाई - पाणिनीय शिक्षा (1 से 30)

चतुर्थ इकाई - पाणिनीय शिक्षा (31 से 60)

**प्रश्नपत्र का प्रारूप एवं अंक विभाजन –**

- प्रथम इकाई से 5 मन्त्रों का हिन्दी अनुवाद एवं व्याख्या 4×5 = **20**
- किसी एक देवता का परिचय 1×5 = **05**

- किसी एक मन्त्र का पदपाठ 1×5 = **05**
- द्वितीय इकाई से टिपण्णीपरक 3 प्रश्न 5×3 = **15**
- तृतीय व चतुर्थ इकाई से हिंदी अनुवाद एवं व्याख्या 6×5 = **30**

कुल अंक **75**

**आन्तरिक मूल्यांकन :**

- परियोजना **10**
- वस्तुनिष्ठ /लघुत्तरीय परीक्षा **10**
- उपस्थिति एवं अनुशासन **05**

कुल अंक **25**

**मूलग्रन्थ :**


- ऋग्वेदसंहिता (सायणभाष्यसहिता) भाग 1 - 4, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान नईदिल्ली।
- ऋग्वेद सायण-भाष्य-सहिता भाग 1-5 (प्र.सम्पादक) नारायणशमासोनटक्के, वैदिकसंशोधनमंडल पूना,1933-51.
- ऋग्वेदसंहिता - (सम्पूर्ण ) (अनुवादक) पं.दामोदरसातवलेकर, पारडी, 1947-52.
- ऋक्सूक्तसौरभ –डॉ आर० के० लौ,ज्ञान प्रकाशन, मेरठ
- ऋक्सूक्तसंग्रह –हरिदत्त शास्त्री,साहित्य भण्डार, मेरठ
- अथर्ववेद भाषाभाष्य –दयानन्द संस्थान दिल्ली
- अथर्ववेदसंहिता (सायणभाष्य)-रामस्वरूप गौड़, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी
- ऋग्वेदभाष्यभूमिका(हिंदी)-श्री जगन्नाथ पाठक, चौखम्बा संस्थान वाराणसी

- ऋग्वेदभाष्यभूमिका(सायण)-भारतीय विद्या प्रकाशन,जवाहर नगर,दिल्ली
- पाणिनीयशिक्षा, व्याख्याकार, शिवराज आचार्य कौण्डिन्न्यायन, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2012.
- पाणिनीय शिक्षा (सम्पादक)विद्यासागर डॉ दामोदर मेहत, मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली

| एम.ए. | सेमेस्टर : तृतीय | पूर्णांक : 75+25=100 |
|---|---|---|
| विषय : संस्कृत (दर्शन वर्ग) | | |
| प्रश्नपत्र कोड : A020904T | प्रश्नपत्र शीर्षक : योग एवं वेदान्त | |
| क्रेडिट : 5 | वैकल्पिक प्रश्नपत्र (Elective) | |

उद्देश्य :

- इस पाठयक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय दर्शन की दो बहुत महत्वपूर्ण शाखाओं – योग और वेदान्त का गहनता से ज्ञान कराना है, जिससे वे भारत की विचार परम्परा की इन दो धाराओं को सम्यक्रूपेण जान सकें।
- पातंजल योग सूत्र पर व्यासभाष्य विद्यार्थियों को योग का गाम्भीर्यपूर्ण एवं विवेचनात्मक चिन्तन प्रदान करता है, इससे वे विषय का गहन रूप से ज्ञान प्राप्त करेंगें।
- योग–दर्शन और वेदान्त दर्शन की पदार्थ मीमांसा एवं प्रमाण–मीमांसा से भी विद्यार्थी परिचित हो सकेंगें।
- आधुनिक समय में योग के व्यवहारिक पक्ष के साथ सैद्धान्तिक पक्ष को भी जानना अति आवश्यक है, तभी इस दर्शन का विद्यार्थियों को सम्यक् बोध होगा। यह ग्रंथ इस अपूर्णता को पूर्ण करता है।
- वेदान्त दर्शन के सुगम अवरोध हेतु वेदान्तपरिभाषा , विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त उपादेय ग्रंथ है। यह ग्रंथ विद्यार्थियों के प्राचीन ज्ञान–विज्ञान के उच्चतम चिन्तन–वेदान्त के सिद्धान्तों को जानने में सहायक होगा।

| इकाई | पाठयविषय |
|---|---|
| 1. | योग सूत्र (समाधिपाद – व्यासभाष्य सहित) |
| 2. | योग सूत्र (साधनपाद – व्यासभाष्य सहित) |
| 3. | वेदान्तपरिभाषा (प्रारम्भ से आगम पर्यन्त) |
| 4. | वेदान्त परिभाषा (अर्थापत्ति सें प्रयोजन पर्यन्त) |

## प्रश्नपत्र का प्रारूप एवं अंक विभाजन

(i) प्रथम इकाई से दो व्याख्या 8 x 2 = 16

(ii) द्वितीय इकाई से दो व्याख्या 8 x 2 = 16

(iii) तृतीय इकाई से एक व्याख्या 10 x 1 = 10

(iv) चतुर्थ इकाई से एक व्याख्या 10 x 1 = 10

(v) योग सूत्र से विस्तृत उत्तरीय प्रश्न (दो विकल्पों में से) एक = 8

(v) वेदान्त परिभाषा से विस्तृत उत्तरीय प्रश्न (तीन विकल्पों में से कोई दो)= 7 ½ x2=15

= **75**

सतत् मूल्यांकन :– कुल अंक – 25

(अ) पाठयक्रम में निर्धारित ग्रंथों पर आधारित अधिन्यास (असाइनमेन्ट) एवं उपस्थिति, अनुशासन एवं आचरण 10 + 5 = 15

(ब) लिखित परीक्षा (वस्तुनिष्ठ / लघु उत्तरीय) 10

मूल ग्रंथ व्याख्या :


1. योगदर्शनम् – उदयवीर शास्त्री, विरजानन्द वैदिक संस्थान, ज्वालापुर
2. पातंजलयोगदर्शनम् – व्याख्याकार, सुरेश चन्द्र श्रीवास्तव, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
3. पातंजल योगदर्शनम् , व्याख्याकार स्वामी हरिहरानन्द 'आरण्यक', मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
4. योगसूत्रम् – अनुवादक रमाशंकर त्रिपाठी, कृष्णदास अकादमी, वाराणसी
5- Yogasutram – Patanjali , J.R. Ballantyne, Pious Book Corp., Delhi
6. वेदान्तपरिभाषा – धर्मराजध्वरीन्द्रप्रणीता, डॉ0 गजानन शास्त्री मुसलगॉवकर
7- Vedanta Paribhasa – Dharmaraja Adhvarindrda by Gopinath Bhattacharya and Prabal Kumar Sen, University of Calcutta
8- Vedanta Paribhasa – Dharmaraja Adhvarindra Translated by Swami Madhavananda


सहायक ग्रंथ –


1. शर्मा चन्द्रधर – भारतीय दर्शन : आलोचन और अनुशीलन, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
2. शर्मा, राममूर्ति : अद्वैत वेदान्त : इतिहास तथा सिद्धान्त , ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली

| एम.ए. | सेमेस्टर : तृतीय | पूर्णांक : 75+25=100 |
|---|---|---|
| विषय : संस्कृत (साहित्य वर्ग) | | |
| प्रश्नपत्र कोड : A020905T | प्रश्नपत्र शीर्षक : साहित्यालोक | |
| क्रेडिट : 5 | वैकल्पिक प्रश्नपत्र (Elective) | |

उद्देश्य :

इस प्रश्नपत्र का मूल उद्देश्य संस्कृत साहित्य के अभूतपूर्व वैशिष्ट्य से ओतप्रोत ग्रन्थों से विद्यार्थियों को अवगत कराना है। कादम्बरी कथामुख, नैषधीयचरितम् तथा विक्रमांकदेव चरितम् सदृश ग्रन्थों के अध्ययन से विद्यार्थी संस्कृत साहित्य में निहित वर्ण्यवैशिष्ट्य तथा साहित्यिक सौन्दर्य से परिचित हो सकेंगे।

निर्धारित पाठ्यक्रम

**प्रथम इकाई**– कादम्बरी कथामुखम्

(प्रास्ताविक पद्य, शूदकवर्णन, चाण्डालकन्या वर्णन, विन्ध्याटवी वर्णन, शाल्मलीवृक्ष वर्णन, जाबालिवर्णन)।

**द्वितीय इकाई**– नैषधीयचरितम् (प्रथम सर्ग)

**तृतीय इकाई**– विक्रमांकदेव चरितम् (प्रथम सर्ग)

**चतुर्थ इकाई**– समीक्षात्मक प्रश्न

## प्रश्नगत का प्रारूप एवं अंक विभाजन

(1) प्रथम इकाई से दो गद्यांशो की व्याख्या 12x20 = 24

(2) द्वितीय इकाई से दो श्लोकों की व्याख्या 9x2 = 18

(3) तृतीय इकाई से दो व्याख्या 7½x2 = 15

(4) प्रत्येक इकाई से सम्बन्धित समीक्षात्मक प्रश्न 6x3 = 18

= 75

आन्तरिक मूल्यांकन .....

(1) असाइनमेन्ट ..... ..... 10 अंक

(2) वस्तुनिष्ठ / लघुउत्तरीय प्रश्न ..... ..... 10 अंक

(3) उपस्थिति, अनुशासन आदि 05 अंक

कुल अंक 25

**मूल ग्रन्थ**


1. कादम्बरी– देवर्षि सनाढ्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
2. कादम्बरी– मथुरानाथ शास्त्री, निर्णयसागर प्रेस, बाम्बे।
3. नैषधीयचरितम् नारायणीटीकोपेतम, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ।
4. नैषधीयचरितम् – शेषराज शर्मा रेग्मी
5. नैषधपरिशीलनम् – डा0 चण्डिका प्रसाद शुक्ल
6. विक्रमांकदेव चरितम् (प्रथम सर्ग) श्री शेषराज शर्मा रेग्मी चौखम्भा अमर भारती प्रकाशन, वाराणसी।
7. विक्रमांकदेव चरितम् – डा0 गजानन शास्त्री मुसलगांवकर चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी।
8. Kadambari – P.V. Kane, Oriental Book Agency Pune


**सहायक ग्रन्थ–**


1. कादम्बरी एक सांस्कृतिक अध्ययन वासुदेवशरण अग्रवाल, चौखम्बा।
2. बाणभट्ट का साहित्यिक अनुशीलन–अमरनाथ पाण्डेय, भारतीय विद्या प्रकाशन वाराणसी 1974


25/5/22

3. नैषध समीक्षा – देव नारायण झा, नाग पब्लिशर्स, दिल्ली।
4. नैषध परिशीलन–चण्डिका प्रसाद शुक्ल हिन्दुस्तान एकेडमी : इलाहाबाद 1960
5. संस्कृत वाङ;मय का वृहद् इतिहास (चतुर्थ खण्ड) सं0 प्रो0 राधावल्लभ त्रिपाठी उ0प्र0 संस्कृत संस्थान, लखनऊ।
6. BANA a Study Meela Sharma, Delhi
7. Naishadh and Sri Harish – Neelkamal Bhattacharya, Saraswati Bhawan Studies, Varanasi
8. History of Classical Sanskrit Literature Krishnamacharnar, Varanasi

25/5/22

| एम० ए० | सेमेस्टर: तृतीय | पूर्णांक: 75 +25 =100 |
|---|---|---|
| विषय : संस्कृत | | |
| प्रश्नपत्र कोड : A020906T | प्रश्नपत्र शीर्षक : उपनिषद् साहित्य एवं निरुक्त | |
| क्रेडिट : 5 | वैकल्पिक प्रश्पत्र (Elective) | |

**उद्देश्य :**

- इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य दार्शनिक मूल्यों को प्रस्तुत करना है| मुख्य रूप से कठोपनिषद् में वर्णित यम-नचिकेता सम्वाद व तैत्तिरीयोपनिषद् की शीक्षावल्ली में आचार्य द्वारा अन्तेवासी को दिये जाने वाले उपदेश से छात्र शान्ति, सद्भाव के लिए अपने ज्ञान को दिन-प्रतिदिन के व्यावहारिक जीवन में लागू करने में सक्षम हो सकेंगे और इसी के साथ निरुक्त अध्ययन से पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान बढ़ा सकेंगे|

**निर्धारित पाठ्यक्रम**

प्रथम इकाई - कठोपनिषद् (सम्पूर्ण)

द्वितीय इकाई - तैत्तिरीयोपनिषद्- शीक्षावल्ली

तृतीय इकाई - निरुक्त – सप्तम अध्याय

चतुर्थ इकाई - निर्वचन – आचार्य,वृत्र, वीर, हृद्, गो, समुद्र, आदित्य, उषस् मेघ,वाक्, उदक् , अश्व, अग्नि,जातवेदस, वैश्वानर, नदी, निघंटु |

**प्रश्नपत्र का प्रारूप एवं अंक विभाजन –**

- प्रथम व द्वितीय इकाई से 8 मन्त्रों का हिंदी अनुवाद एवं व्याख्या 5×8 = **40**
- तृतीय इकाई से अनुवाद एवं व्याख्या 4×5= **20**

- चतुर्थ इकाई से 5 निर्वचन 3×5 = 15

कुल अंक 75

**आन्तरिक मूल्यांकन :**

- परियोजना 10
- वस्तुनिष्ठ /लघुत्तरीय परीक्षा 10
- उपस्थिति एवं अनुशासन 05

कुल अंक 25

**संस्तुत पुस्तकें :**


- कठोपनिषद्(सम्पादक)आचार्य डॉ सुरेन्द्रदेव शास्त्री, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी,
- कठोपनिषद्(सम्पादक)डॉ पुष्पा गुप्ता, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान दिल्ली
- तैत्तिरीयोपनिषद् तत्त्व विवेचनी हिंदी व्याख्या सहित –त्रिभुवन दास
- निरुक्त –डॉ श्रीकान्त पाण्डेय, साहित्यभंडार, मेरठ।
- निरुक्तम्(कश्यपप्रजापतिकृत- निघण्टुभाष्यरूपम्), पं. मुकुंद झा बख्शी, चो खम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली, 2012
- निरुक्त–दैवतकाण्ड 7-12, (सम्पादक)सीतारामशास्त्री, परिमल पब्लिकेशन्स दिल्ली, 1995
- चौबे,व्रजबिहारी.(सम्पा.)संस्कृत् वाङ्मय का बृहद् इतिहास, प्रथम खण्ड,उत्तरप्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ,1996

| एम.ए. | सेमेस्टर : तृतीय | पूर्णांक : 75+25=100 |
|---|---|---|
| विषय : संस्कृत (दर्शन वर्ग) | | |
| प्रश्नपत्र कोड : A020907T | प्रश्नपत्र शीर्षक : न्याय एवं वैशेषिक दर्शन | |
| क्रेडिट : 5 | वैकल्पिक प्रश्नपत्र (Elective) | |

उद्देश्य :

- न्यायदर्शन भारत के प्रमुख छः वैदिक दर्शनों में से एक है। न्यायसूत्र न्यायदर्शन का सबसे प्राचीन ग्रंथ है, जिसके प्रवर्तक ऋषि अक्षपाद गौतम हैं। 'नीयते विवक्षितार्थः अनेन इति न्यायः' जिस साधन के द्वारा हम अपने विवक्षित (ज्ञेय) तत्व के पास पहुँच जाते हैं व उसे जान पाते हैं, वही साधन न्याय है। इस प्रकार न्याय को दर्शन का प्रवेश द्वार कहा जा सकता है, जिसे जानना अति आवश्यक है।
- न्याय और इसके युग्म वैशेषिक दर्शन, जिसके प्रवर्तक कणाद मुनि हैं, के मूलभूत सिद्धान्तों को समझने में पाठयक्रम के दोनो ग्रंथ न्यायसूत्र (न्यायभाष्य सहित) एवं प्रशस्तपाद– भाष्य, अत्यन्त सहायक हैं।
- इन ग्रंथों के अध्ययन से उक्त दर्शनों की प्रमुख अवधारणाओं को समझने में सहायता मिलेगी।
- दोनो ग्रंथो की प्रमाण–मीमांसा के अध्ययन से विद्यार्थियों की तर्कक्षमता एवं आलोचनात्मक दृष्टि विकसित होगी।
- साथ ही भारतीय दर्शन में न्याय–वैशेषिक की भूमिका को जानने एवं सत्य को प्राप्त करने में विद्यार्थियों को सहायता प्राप्त होगी।

| इकाई | पाठयविषय |
|---|---|
| 1. | न्यायसूत्र एवं न्यायभाष्य – प्रथम अध्याय (प्रथम आह्निक) सूत्र संख्या (1 से 60 पर्यन्त) |
| 2. | न्यायसूत्र एवं न्यायभाष्य – प्रथम अध्याय (प्रथम आह्निक) सूत्र संख्या (61 से 82 पर्यन्त) एवं द्वितीय आह्निक |
| 3. | प्रशस्तपादभाष्य – प्रथम अध्याय (प्रारम्भ से मनः प्रकरण पर्यन्त) |
| 4. | प्रशस्तपादभाष्य – प्रथम अध्याय (साधर्म्यप्रकरण से परत्वापरत्व प्रकरण पर्यन्त) |

## प्रश्नपत्र का प्रारूप एवं अंक विभाजन

(i) प्रथम इकाई से एक व्याख्या 10 x 1 = 10

(ii) द्वितीय इकाई से एक व्याख्या 10 x 1 = 10

(iii) तृतीय इकाई से एक व्याख्या 10 x 1 = 10

(iv) चतुर्थ इकाई से एक व्याख्या 10 x 1 = 10

(v) प्रथम दो इकाई से दो विस्तृत उत्तरीय प्रश्न (तीन में से कोई दो) = 20

तथा अंतिम दो इकाई से दो विस्तृत उत्तरीय प्रश्न (तीन में से कोई दो)= 7½ x2=15

= **75**

सतत् मूल्यांकन :–  कुल अंक – 25

(अ) पाठयक्रम में निर्धारित ग्रंथों पर आधारित अधिन्यास (असाइनमेन्ट) एवं उपस्थिति, अनुशासन एवं आचरण  10 + 5 = 15

(ब) लिखित परीक्षा (वस्तुनिष्ठ/लघु उत्तरीय)  10

मूल ग्रंथ व्याख्या :

1. न्यायसूत्र एवं न्यायभाष्य – प्रथम अध्याय – आचार्य ढुण्डिराज शास्त्री विनिर्मित प्रकाशिका हिन्दी व्याख्या, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी
2. प्रशस्तपादभाष्य– श्री दुर्गाधर झा कृत हिन्दी व्याख्या
3. न्यायदर्शनम् – आचार्य उदयवीर शास्त्री, विरजानन्द वैदिक संस्थान, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश
4. प्रशस्तपादभाष्यम् – 'प्रकाशिका' हिन्दी व्याख्याविभूषितम्, आचार्य ढुण्डिराज शास्त्री, चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी

सहायक ग्रंथ –

1. भारतीय दर्शन – आचार्य बलदेव उपाध्याय, चौखम्भा ओरियन्टल प्रकाशन, वाराणसी
2. भारतीय दर्शन – डॉ0 जगदीश चन्द मिश्र, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी ।

| एम.ए. | सेमेस्टर : तृतीय | पूर्णांक : 75+25=100 |
|---|---|---|
| विषय : संस्कृत (चतुर्थ प्रश्नपत्र) | | |
| प्रश्नपत्र कोड : A020908T | प्रश्नपत्र शीर्षक : रूपकालोक | |
| क्रेडिट : 5 | अनिवार्य प्रश्नपत्र (Elective) | |

उद्देश्य :

इस प्रश्नपत्र का मुख्य उद्देश्य साहित्य के विद्यार्थियों को रूपक साहित्य के ज्ञान से अवगत कराना है। इससे विद्यार्थी संस्कृत नाट्य साहित्य (रूपक) को सामान्य रूप से समझने में विद्यार्थी सक्षम होंगें। नाटक की पारिभाषिक शब्दावली से सुपरिचित होंगे। साथ ही भारतीय सांस्कृतिक तत्वों एवं मूल्यों को आत्मसात कर भारतीय ज्ञान को समझ सकेंगे।

निर्धारित पाठयक्रम

प्रथम इकाई – मृच्छकटिकम्
(1 – 5 अंक)

द्वितीय इकाई – वेणी संहार
(प्रथम अंक)

तृतीय इकाई – मुद्राराक्षस
(प्रथम अंक)

चतुर्थ इकाई – समीक्षात्मक प्रश्न

## प्रश्नपत्र का प्रारूप एवं अंक विभाजन

(i) प्रथम इकाई से दो श्लोकों की सप्रसंग व्याख्या 12 x 2 = 24

| | | | |
|---|---|---|---|
| (ii) | द्वितीय इकाई से दो श्लोकों की सप्रसंग व्याख्या | 9 x 2 | = 18 |
| (iii) | तृतीय इकाई से दो श्लोकों की सप्रसंग व्याख्या | 7 ½ x 2 | = 15 |
| (iv) | प्रत्येक इकाई से सम्बन्धित तीन समीक्षात्मक प्रश्न | 4 x 3 | = 12 |
| | नाट्य सम्बन्धी पारिभाषिक शब्द | 2 x 3 | = 06 |
| | कुल अंक | | = 75 |

आन्तरिक मूल्यांकन –

| | | |
|---|---|---|
| (अ) परियोजना | – | 10 |
| (ब) वस्तुनिष्ठ परीक्षा | – | 10 |
| (स) छात्र/छात्रा की उपस्थिति एवं अनुशासन | – | 05 |
| कुल अंक | | 25 |

## मूल ग्रन्थ


मृच्छकटिकम् – (पृथ्वी धरकृत टीका सहित) निर्णय सागर प्रेस, बम्बई

मृच्छकटिकम् – विश्वनाथ शर्मा हंसा प्रकाशन जयपुर

मृच्छकटिकम् – डॉ0 रमाशंकर त्रिपाठी, चौखम्भा प्रकाशन वाराणसी

वेणी संहारनाटकम् – रमाशंकर त्रिपाठी चौखम्भा प्रकाशन वाराणसी

वेणीसंहारनाटकम् – 'प्रबोधिनी' संस्कृत हिन्दी व्याख्योपेत चौखम्भा प्रकाशन वाराणसी

मुद्राराक्षस नाटकम् – डॉ0 सत्यव्रत सिंह कृत शशिकला, चौखम्भा प्रकाशन वाराणसी

MRICHCHAKATIKA of Sudraka by M.R. Kale चौखम्भा प्रकाशन वाराणसी

Venisamhara translation by C. Sonkar Rama Sastai चौखम्भा प्रकाशन वाराणसी

## सहायक ग्रंथ


1. संस्कृत नाटक ए0बी0 कीथ (अनु उदयभान सिंह)
   मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली 1965
2. मृच्छकटिक शास्त्रीय सामाजिक एवं राजनीतिक अध्ययन
   शालिग्राम द्विवेदी विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी
3. संस्कृत नाटककार, कान्ति किशोर भरतिया, सूचना विभाग उ0प्र0 1959
4. Introduction to the Study of Mracchakatika Popular Prakashan Bombay.
5. राजशेखर के रूपकों में प्रेम एवं सौन्दर्य – डॉ0 आशारानी पाण्डेय, निखिल प्रकाशन, आगरा
6. मृच्छकटिक प्रकरण एक सांस्कृतिक चिन्तन – डॉ0 पुष्पा यादव, आशा प्रकाशन, कानपुर

| एम.ए. | सेमेस्टर : चतुर्थ | पूर्णांक : 75+25=100 |
|---|---|---|
| विषय : संस्कृत (प्रथम प्रश्नपत्र) | | |
| प्रश्नपत्र कोड : A021001T | प्रश्नपत्र शीर्षक : नाटक एवं नाट्य साहित्य | |
| क्रेडिट : 5 | अनिवार्य प्रश्नपत्र (Core) | |

**उद्देश्य :**

इस पाठयक्रम का मूल उद्देश्य साहित्य के विद्यार्थियों को रत्नावली के साथ दशरूपक के नाटयसिद्धान्तों से परिचित कराना है। यह पाठयक्रम विद्यार्थियों को नाट्यशास्त्रीय सिद्धान्तों से अवगत कराने में सहयोग प्रदान करेगा।

**निर्धारित पाठयक्रम**

प्रथम इकाई – दशरूपक (धनंजयकृत) (प्रथम व द्वितीय प्रकाश)

द्वितीय इकाई – दशरूपक (धनंजयकृत) (तृतीय व चतुर्थ प्रकाश)

तृतीय इकाई – रत्नावली ( प्रथम , द्वितीय अंक)

चतुर्थ इकाई – रत्नावली (तृतीय , चतुर्थ अंक )

## प्रश्नपत्र का प्रारूप एवं अंक विभाजन

| | | |
|---|---|---|
| (i) | प्रथम इकाई से दो कारिकाओं की व्याख्या | 5 x 2 = 10 |
| | एक दीर्घ प्रश्न | 5 x 1 = 05 |
| | पारिभाषिक शब्दों पर टिप्पणी | 2 ½ x 2 = 05 |
| (ii) | द्वितीय इकाई से दो कारिकाओं की व्याख्या | 5 x 2 = 10 |
| | एक दीर्घ प्रश्न | 5 x 1 = 05 |
| | पारिभाषिक शब्दों पर टिप्पणी | 2 ½ x 2 = 05 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| (iii) | तृतीय इकाई से दो श्लोकों की व्याख्या | 7 x 2 | = 14 |
| | दीर्घ प्रश्न (नाटककार से सम्बन्धित) | 6 x 1 | = 06 |
| (iv) | चतुर्थ इकाई से दो श्लोकों की व्याख्या | 5 x 2 | = 10 |
| | दीर्घ प्रश्न | 5 x 1 | = 05 |
| | कुल अंक | | = 75 |

आन्तरिक मूल्यांकन –

| | | |
|---|---|---|
| (अ) परियोजना | – | 10 |
| (ब) वस्तुनिष्ठ परीक्षा | – | 10 |
| (स) छात्र/छात्रा की उपस्थिति एवं अनुशासन | – | 05 |
| कुल अंक | | 25 |

**मूल ग्रन्थ**


(1) दशरूपकम् (अवलोकसहितम्) धनंजय आचार्य श्रीनिवास शास्त्री

(2) दशरूपकम् (अवलोकटीकायुतम्) धनंजय डॉ0 भोलाशंकर व्यास

(3) रत्नावली नाटिका – मेहरचन्द्र लक्ष्मणदास प्रकाशन नई दिल्ली

(4) रत्नावली नाटिका – श्री रामचन्द्र मिश्र चौखम्भा अमर भारती प्रकाशन नई दिल्ली


**सहायक ग्रंथ –**


(1) संस्कृत नाट्य सौरभ – जी0के0 भट्ट

(2) संस्कृत ड्रामाटिस्ट – के0पी0 कुलकर्णी

(3) भारतीय नाट्य शास्त्र की परम्परा और दशरूपक – हजारी प्रसाद द्विवेदी राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली

(4) नाट्यशास्त्र – रघुवंश– मोतीलाल बनारसी दास वाराणसी

(5) Sanskrit Drama and Dramatology – T.G. Mainkar Azanta Publication, Delhi

| एम० ए० | सेमेस्टर: चतुर्थ | पूर्णांक: 75 +25 =100 |
|---|---|---|
| विषय : संस्कृत | | |
| प्रश्नपत्र कोड : A021002T | प्रश्नपत्र शीर्षक : ब्राह्मण व आरण्यक साहित्य | |
| क्रेडिट : 5 | वैकल्पिक प्रश्पत्र (Elective) | |

**उद्देश्य :**

- इस पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य ब्राह्मणग्रन्थ व आरण्यक ग्रन्थों के परिचय के साथ ही उनमें निहित सरल आख्यान द्वारा जीवन के गूढ़ तत्वों का ज्ञान कराना है | वैदिक वांग्मय के ज्ञान से छात्र भारतीय शास्त्र परम्परा पर गौरवानुभूति कर सकेंगे|

**निर्धारित पाठ्यक्रम :**

प्रथम इकाई - ऐतरेयब्राह्मण- (अध्याय 33)- हरिश्चन्द्रोपाख्यान(शुनःशेप)

द्वितीय इकाई - शतपथ ब्राह्मण- वांगमनस्, मनु एवम् श्रद्धा आख्यान

तृतीय इकाई - ऐतरेय आरण्यक(अध्याय3)-संहिता,पदपाठ,स्वर,व्यंजनादि स्वरूप

चतुर्थ इकाई - तैत्तिरीय आरण्यक (2प्रपाठक)-अग्निहोत्र, पञ्चमहायज्ञ

**प्रश्नपत्र का प्रारूप एवं अंक विभाजन :**

- प्रथम व द्वितीय इकाई से 5 गद्य का हिन्दी अनुवाद एवं व्याख्या 7×5 = **35**
- तृतीय इकाई से टिपण्णीपरक 5 प्रश्न 2×5 = **10**
- चतुर्थ इकाई से 4 मन्त्र व्याख्या एवं 5×4 = **20**

  2 टिप्पणी 5×2 = **10**

  कुल अंक = **75**

**आन्तरिक मूल्यांकन :**

| | |
|---|---|
| • परियोजना | **10** |
| • वस्तुनिष्ठ /लघुत्तरीय परीक्षा | **10** |
| • उपस्थिति एवं अनुशासन | **05** |
| कुल अंक | **25** |

**संस्तुत पुस्तकें –**

- ऐतरेयब्राह्मण-सायण-भाष्य सहित,आनन्दाश्रम पूना,1931
- ऐतरेयब्राह्मण-सायणभाष्य एवं "शशिप्रभा" हिन्दी व्याख्या विभूषित,व्याख्याकार-डॉ जमुना पाठक (1-2भाग सम्पूर्ण )
- हरिश्चंद्रोपाख्यान (सायणभाष्यसहित) प्रकाश हिन्दी टीका,व्या०डॉ उमा शंकर शर्मा ऋषि
- शतपथब्राह्मण-सायण-भाष्य सहित, सत्यव्रत सामश्रमी,कलकत्ता,1903
- ऐतरेय आरण्यक - सायण-भाष्य सहित, आनन्दाश्रम पूना,1898
- तैत्तिरीय आरण्यक-सायण-भाष्यसहित, राजेन्द्र लाल मित्र कलकत्ता 1872

| एम.ए. | सेमेस्टर : चतुर्थ | पूर्णांक : 75+25=100 |
|---|---|---|
| विषय : संस्कृत (दर्शन वर्ग) | | |
| प्रश्नपत्र कोड : A021003T | प्रश्नपत्र शीर्षक : सांख्य एवं योग | |
| क्रेडिट : 5 | वैकल्पिक प्रश्नपत्र (Elective) | |

उद्देश्य :

- इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को वाचस्पति मिश्र की सांख्य – तत्वकौमुदी और पातंजल योग – इन दो सूत्र ग्रंथो के माध्यम से सांख्य और योग इस युग्म दर्शन के सिद्धान्तों का विस्तृत और गहन बोध कराना है।
- इस पाठ्यक्रम से विद्यार्थी भारतीय दर्शन परम्परा की इन दो शाखाओं का विश्लेषणात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन कर सकेंगें।
- वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सांख्य और योग दर्शन के सिद्धान्तों के वैज्ञानिक विवेचन से विद्यार्थी परिचित हो सकेंगें।
- सांख्य और योग की ज्ञान–मीमांसा , सृष्टिक्रम एवं प्रलय, प्रमाणमीमांसा आदि सिद्धान्तों का अवबोध विद्यार्थी महनता से कर सकेंगें।
- भारतीय चिन्तन परम्परा में उक्त दो मतों का स्थान एवं अवदान विद्यार्थियों को बोधगम्य होगा।

| इकाई | पाठ्यविषय |
|---|---|
| 1. | सांख्यतत्वकौमुदी – वाचस्पति मिश्र (कारिका 1 से 36) |
| 2. | सांख्यतत्वकौमुदी – वाचस्पति मिश्र |

| | |
|---|---|
| | (कारिका 37 से 72) |
| 3. | योगसूत्र – पतंजलि (विभूतिपाद)<br>व्यासभाष्य सहित |
| 4. | योग सूत्र – पतंजलि (कैवल्यपाद)<br>व्यासभाष्य सहित |

## प्रश्नपत्र का प्रारूप एवं अंक–विभाजन

(i) प्रथम इकाई से दो व्याख्या 8 x 2 = 16

(ii) द्वितीय इकाई से दो व्याख्या 8 x 2 = 16

(iii) तृतीय इकाई से एक व्याख्या = 10

(iv) चतुर्थ इकाई से एक व्याख्या = 10

(v) सांख्यतत्वकौमुदी से समीक्षा एवं विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

(दो विकल्पों में से कोई एक) = 8

(vi) तीसरी एवं चतुर्थ इकाई से एक एक प्रश्न = 7 ½ x 2 = 15

= 75

सतत मूल्यांकन :–

(1) पाठ्यक्रम में निर्धारित ग्रंथों पर आधारित अधिन्यास (असाइनमेन्ट)

एवं

उपस्थिति, अनुशासन एवं आचरण 10 + 5 = 15

(ब) लिखित परीक्षा (वस्तुनिष्ठ/लघुउत्तरीय) 10

संस्तुत ग्रंथ –


1. सांख्यतत्वकौमुदी – सर्वतंत्रस्वतंत्रश्रीवाचस्पतिमिश्रविरचिता , व्याख्याकार, डॉ0 ओम प्रकाश पाण्डेय, चौखम्भा सरस्वती भवन, वाराणसी।

2. सांख्यतत्वकौमुदी – वाचस्पति मिश्र, हिन्दी अनुवाद एवं व्याख्या , पं0 गजानन्द शास्त्री मुसलगॉवकर ।

3. योगसूत्रम् – पतंजलि, अनुवादक, महाप्रभुलाल गोस्वामी, चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी।

4. योगसूत्रम् – पतंजलि, अनुवादक, रमाशंकर त्रिपाठी, कृष्णदास अकादमी, वाराणसी।

5. योगदर्शनम् – आचार्य उदयवीर शास्त्री, विरजानन्द वैदिक संस्थान, ज्वालापुर ।

6. पातंजलयोगदर्शनम् – पतंजलि, व्याख्याकार – सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, चौखम्भा, सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।

7. पातंजलयोगदर्शनम् – (व्यासभाष्य, तत्ववैशारदी और योगवार्तिक सहित) – डॉ0 विमला, कर्नाटक, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

8. Yogasutram - Patanjali, (ed.) J.R. Ballantyne, Pious Book Corp., Delhi.

| एम.ए. | सेमेस्टर : चतुर्थ | पूर्णांक : 75+25=100 |
|---|---|---|
| विषय : संस्कृत (द्वितीय प्रश्नपत्र) | | |
| प्रश्नपत्र कोड : A021004T | प्रश्नपत्र शीर्षक : आधुनिक संस्कृत काव्य | |
| क्रेडिट : 5 | अनिवार्य प्रश्नपत्र (Elective) | |

## उद्देश्य :

इस पाठयक्रम का मूल उद्देश्य विद्यार्थियों को आधुनिक संस्कृत काल सम्बन्धी कतिपय महत्वपूर्ण ग्रंथों का अध्ययन कराना है। इस पाठयक्रम के अध्ययन से विद्यार्थी निश्चित रूप से संस्कृत काव्य की अनवरत लेखन परम्परा से परिचित हो सकेंगें।

## निर्धारित पाठयक्रम

प्रथम इकाई – कुमार विजय – प्रो0 रेवा प्रसाद द्विवेदी (षष्ठ सर्ग)
द्वितीय इकाई – रात्रिर्गमिष्यति – डॉ0 रमाशंकर अवस्थी (प्रथम सर्ग)
तृतीय इकाई – इक्षुगन्धा – प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र
चतुर्थ इकाई – कवि परिचय तथा आलोचनात्मक प्रश्न

## प्रश्नपत्र का प्रारूप एवं अंक विभाजन

| | | | |
|---|---|---|---|
| (i) | प्रथम इकाई से दो व्याख्या | 10 x 2 | = 20 |
| (ii) | द्वितीय इकाई से दो व्याख्या | 10 x 2 | = 20 |
| (iii) | तृतीय इकाई से दो व्याख्या | 10 x 2 | = 20 |
| (iv) | चतुर्थ इकाई से कवि परिचय सम्बन्धी दो प्रश्न | 5 x 2 | = 10 |
| | आलोचना सम्बन्धी एक प्रश्न | 5 x 1 | = 05 |
| | | | = 75 |

आन्तरिक मूल्यांकन –

| | | |
|---|---|---|
| (अ) परियोजना | – | 10 |
| (ब) वस्तुनिष्ठ परीक्षा | – | 10 |
| (स) छात्र/छात्रा की उपस्थिति एवं अनुशासन | – | 05 |
| कुल अंक | | 25 |

**मूल ग्रंथ :**

1. कुमार विजयम – प्रो0 रेवा प्रसाद द्विवेदी
2. रात्रिर्गमिष्यति – डॉ0 रमाशंकर अवस्थी
3. इक्षुगन्धा – प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र

**संस्कृत ग्रन्थ :**


(1) संस्कृत साहित्य – बीसवीं शता0 – डॉ0 राधावल्लभ त्रिपाठी – राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान जनकपुरी, नई दिल्ली ।

(2) आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास (वृहद) (सप्तम खण्ड) डॉ0 बलदेव उपाध्याय, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ

(3) संस्कृत साहित्य का इतिहास – राजशेखर पाण्डेय

(4) आधुनिक संस्कृतसाहित्येतिहासः – देवर्षि कलानाथ शास्त्री

| एम० ए० | सेमेस्टर: चतुर्थ | पूर्णांक: 75 +25 =100 |
|---|---|---|
| विषय : संस्कृत | | |
| प्रश्नपत्र कोड : A021005T | प्रश्नपत्र शीर्षक: ऋग्वैदिक् संवादसूक्त एवं निरुक्त | |
| क्रेडिट : 5 | वैकल्पिक प्रश्पत्र (Elective) | |

**उद्देश्य :**

- प्रस्तुत ऋग्वैदिक् संवादसूक्तों के माध्यम से छात्र, गूढ़ दार्शनिक, रहस्यात्मक व नैतिक तथ्यों को सुरुचिपूर्वक जानने का प्रयास करेंगे | वेदों के सर्वाधिक गूढ़ अर्थ वाले देवता वाचक शब्दों के गहन चिंतन के लिए निरुक्त अत्यंत सहायक सिद्ध होगा|

**निर्धारित पाठ्यक्रम :**

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम इकाई | - | पुरुरवा –उर्वशी, यम –यमी संवाद सूक्त |
| द्वितीय इकाई | - | सरमा –पणि, विश्वामित्र-नदी संवाद सूक्त |
| तृतीय इकाई | - | निरुक्त 12 वां अध्याय |
| चतुर्थ इकाई | - | पारस्कर गृह्यसूत्र (प्रथम कांड) |

**प्रश्न पत्र का प्रारूप एवं अंक विभाजन :**

| | | |
|---|---|---|
| • प्रथम व द्वितीय इकाई से 5 मन्त्र व्याख्या | 7×5 = | **35** |
| • तृतीय इकाई से 5 हिंदी अनुवाद एवं व्याख्या | 4×5 = | **20** |
| • चतुर्थ इकाई से 3 की हिंदी एवं व्याख्या एवं 2 टिप्पणी | 3×5 = | **15** |
| | 2.5×2 = | **05** |
| कुल अंक | = | **75** |

**आन्तरिक मूल्यांकन :**

- परियोजना **10**
- वस्तुनिष्ठ /लघुत्तरीय परीक्षा **10**
- उपस्थिति एवं अनुशासन **05**

कुल अंक **25**

**मूलग्रन्थ :**

- ऋग्वेदसंहिता (सायणभाष्यसहिता) भाग 1 - 4, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान नईदिल्ली।
- ऋग्वेदसंहिता- स्वामी दयानन्द एवं आर्यमुनि कृत संस्कृत –हिंदी भाष्य
- निरुक्त –चन्द्रमणि विद्यालंकार ,हिन्दी अनुवाद
- निरुक्तालोचन –सत्यव्रत सामश्रमी
- निरुक्त-पञ्चाध्यायी- (व्याख्याकार) महामहोपाध्याय छज्जूरामशास्त्री, मेहरचंद लक्ष्मनदास पब्लिकेशन्स दिल्ली, 1985
- निरुक्त - यास्क, टीकाद्वय-सहित (सम्पादक) लक्ष्मणसरूप, भागI-II, दिल्ली, 1982
- पारस्कर गृह्यसूत्र –हरिहर भाष्य एवं हिन्दी,ओम्प्रकाश पाण्डेय,चौखम्बा,वाराणसी
- पारस्कर गृह्यसूत्रम्- हरिहर 'गदाधर'भाष्यद्वयोपेतम् हिन्दी व्याख्योपेतम्, व्याख्याकार – जगदीशचन्द्रमिश्र चौखम्बा सुरभारतीप्रकाशन।

**सहायकग्रन्थ :**

- कृष्णलाल - गृह्यसूत्र और उनका विनियोग, दिल्ली।
- शशिप्रभा, कुमार – वैदिकविमर्श, जे-पी-पब्लिशिंगहाउस, दिल्ली, 1996
- वेद पारिजात, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 2014

- 2. Apte, V.M. - Social Life in the Gṛhya Sutra's.
- Pandey, Raj Bali - Hindu Samsara's (English and Hindi Versions), Chaukhambha, Delhi.


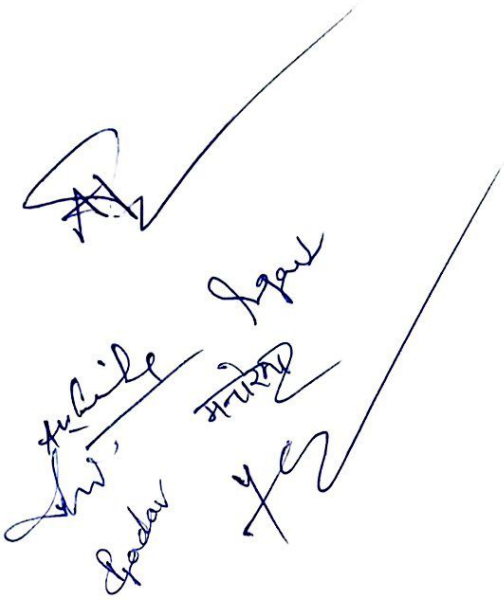

| एम.ए. | सेमेस्टर : चतुर्थ | पूर्णांक : 75+25=100 |
|---|---|---|
| विषय : संस्कृत | | |
| प्रश्नपत्र कोडः A021006T | प्रश्नपत्र शीर्षक :<br>न्याय वैशेषिक, लोकायत एवं जैन दर्शन | |
| क्रेडिट : 5 | वैकल्पिक प्रश्नपत्र (Elective) | |

उद्देश्य :

- इस पाठयक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को विश्वनाथ पच्चानन की पुस्तक 'न्यायसिद्धान्तमुक्तावली' से न्याय एवं वैशेषिक तथा सर्वदर्शनसंग्रह से चार्बाक और जैन दर्शन का विस्तृत एवं गहन बोध कराना है।
- इस पाठयक्रम से विद्यार्थी भारतीय परिप्रेक्ष्य में इन ग्रंथों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगें।
- न्याय एवं वैशेषिक दर्शन की पदार्थ मीमांसा एवं प्रमाण मीमांसा का सम्यक ज्ञान विद्यार्थियों को होगा।
- विद्यार्थी न्याय वैशेषिक दर्शन के विभिन्न सिद्धान्तों का तुलनात्मक ज्ञान प्राप्त कर सकेंगें।
- भारतीय दर्शन की कतिपय अन्य शाखाओं का भी ज्ञान विद्यार्थी इस पाठयक्रम से प्राप्त कर सकेंगें।

| इकाई | पाठयविषय |
|---|---|
| 1. | न्याय सिद्धान्त मुक्तावली – प्रत्यक्ष खण्ड व्याख्या (दो) |
| 2. | न्याय सिद्धान्त मुक्तावली<br>अनुमान पर्यन्त , व्याख्या (दो) |

| | |
|---|---|
| 3. | चार्वाक (लोकायत) दर्शन –सर्वदर्शन संग्रह से व्याख्या (एक) |
| 4. | जैन दर्शन – सर्वदर्शनसंग्रह से व्याख्या (एक) |
| नोट | तीनों ग्रंथों से समीक्षात्मक एवं विस्तृत उत्तरीय प्रश्न प्रत्येक 8 अंक (न्याय सि मु0 से दो प्रश्न होंगें, जिसमें से विद्यार्थी को कोई एक प्रश्न करना होगा। |

## प्रश्नपत्र का प्रारूप एवं अंक–विभाजन

(i) प्रथम इकाई से दो व्याख्या 8 x 2 = 16

(ii) द्वितीय इकाई से दो व्याख्या 7½ x 2 = 15

(iii) तृतीय इकाई से एकव्याख्या = 10

(iv) चतुर्थ इकाई से एक व्याख्या = 10

(v) तीनों ग्रंथों से समीक्षात्मक एवं विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

(न्याय सिद्धान्त मुक्तावली से दो प्रश्न होंगें जिसमें से विद्यार्थी को कोई एक प्रश्न करना होगा।) 8 x 3 = 24

= 75

प्रस्तावित सतत मूल्यांकन 25

पाठयक्रम में निर्धारित ग्रंथो पर आधारित अधिन्यास (असाइनमेन्ट) एवं उपस्थिति अनुशासन एवं आचरण 10+5 = 15

लिखित परीक्षा (वास्तुनिष्ठ/लघु उत्तरीय) 10

संस्तुत ग्रंथ

1. न्यायसिद्धान्तमुक्तावली – विश्वनाथ पंचानन भटटाचार्य, व्याख्याकार – गजानन शास्त्री, मुसलगॉवकर, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी

2. न्यायसिद्धान्तमुक्तावली – विश्वनाथ पंचानन भटटाचार्य, व्याख्याकार – धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली

3. कारिकावली – विश्वनाथ पंचानन भटटाचार्य (प्रभा–मंजूषा–दिनकरी– रामरूद्री इत्यादि टीका सहित) चौखम्भा संस्कृत सीरीज – वाराणसी

**सहायक ग्रंथ**

1. धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री, न्यायवैशेषिक, मोतीलाल बनारसीदास , दिल्ली

2. सांख्य एवं जैनदर्शन की तत्वमीमांसा – डॉ0 रामकिशोर शर्मा, ज्ञान प्रकाशन, मेरठ।

3. सर्वदर्शनसंग्रह – उमाशंकर शर्मा, चौखम्भा विद्या भवन, वाराणसी।

4. S.N. Dasgupta – "A History of Indian Philosophy', M.L.B.D. Delhi (Also Hindi Translation by Kalanath & Sudhir Kumar, Rajasthan Hindi Grantha Academy)

5. Ram Chandra Pandey – "Panorama of Indian Philosophy" (English & Hindi Version) , M.L.B.D. Delhi

6- Sarvadarshan Sangraha of Madhav – Edited by U.S. Sharma, Varanasi.

| एम.ए. | सेमेस्टर : चतुर्थ | पूर्णांक : 75+25=100 |
|---|---|---|
| विषय : संस्कृत (तृतीय प्रश्नपत्र) | | |
| प्रश्नपत्र कोड : A021007T | प्रश्नपत्र शीर्षक : महाकाव्य सौरभम् | |
| क्रेडिट : 5 | अनिवार्य प्रश्नपत्र (Elective) | |

## उद्देश्य :

इस प्रश्नपत्र का मूल उद्देश्य संस्कृत साहित्य के सुरभित महाकाव्यों के ज्ञान से विद्यार्थियों को अवगत कराना है। रघुवंश, शिशुपालवध तथा किरातार्जुनीयम महाकाव्यों के अध्ययन से साहित्य के अनुपम सौन्दर्य से विद्यार्थी परिचित हो सकेंगें।

## निर्धारित पाठयक्रम

प्रथम इकाई – रघुवंश
(प्रथम एवं द्वितीय सर्ग)

द्वितीय इकाई – शिशुपाल वध
(प्रथम सर्ग)

तृतीय इकाई – किरातार्जुनीयम
(द्वितीय सर्ग)

चतुर्थ इकाई – समीक्षात्मक प्रश्न

## प्रश्नपत्र का प्रारूप एवं अंक विभाजन

| | | | |
|---|---|---|---|
| (i) | प्रथम इकाई से दो श्लोकों की व्याख्या | 10 x 2 | = 20 |
| (ii) | द्वितीय इकाई से दो श्लोकों की व्याख्या | 10 x 2 | = 20 |
| (iii) | तृतीय इकाई से दो श्लोकों की व्याख्या | 10 x 2 | = 20 |
| (iv) | प्रत्येक इकाई से एक–एक कुल 3 समीक्षात्मक प्रश्न | 5 x 3 | = 15 |
| | | | = 75 |

आन्तरिक मूल्यांकन –

| | | |
|---|---|---|
| (अ) परियोजना | – | 10 |
| (ब) वस्तुनिष्ठ परीक्षा | – | 10 |
| (स) छात्र/छात्रा की उपस्थिति एवं अनुशासन | – | 05 |
| कुल अंक | | 25 |

## मूल ग्रन्थ

1. रघुवंश महाकाव्य संजीवनी व्याख्या, चौखम्भा प्रकाशन वाराणसी
2. रघुवंश महाकाव्य मल्लिनाथ टीका पं0 रामचन्द झा, चौखम्भा प्रकाशन वाराणसी
3. रघुवंश
4. शिशुपालवधम् मल्लिनाथ व्याख्या, चौखम्भा प्रकाशन वाराणसी
5. शिशुपालवधम् सुधा व्याख्योपेतम्, चौखम्भा प्रकाशन वाराणसी
6. किरातार्जुनीयम् महाकाव्य अनु0 श्री राम त्रिपाठी लोकभार प्रकाशन, इलाहाबाद
7. किरातार्जुनीयम् सान्वय भावबोधिनी व्याख्याकार डॉ0 सतीप्रसाद मिश्र, चौखम्भा अमर भारती प्रकाशन
8. किरातार्जुनीयम्

   घण्टापथ प्रकाशन, चौखम्भा अमरभारती प्रकाशन

## सहायक ग्रंथ

1. संस्कृत महाकाव्य परम्परा, डॉ0 केशवराज मुसलगांवकर
2. संस्कृत साहित्य का इतिहास, आर्थर मैकडाल अनु0 चारू चन्द्र शास्त्री चौखम्भा
3. कालिदास ग्रंथावली, डॉ0 सीताराम च उ0प्र0 संस्कृत संस्थान, लखनऊ

| एम० ए० | सेमेस्टर: चतुर्थ | पूर्णांक: 75 +25 =100 |
|---|---|---|
| विषय : संस्कृत | | |
| प्रश्नपत्र कोड : A021008T | प्रश्नपत्र शीर्षक: वैदिकव्याख्यान पद्धतियां एवं इतिहास | |
| क्रेडिट : 5 | वैकल्पिक प्रश्पत्र (Elective) | |

**उद्देश्य :**

- यह पाठ्यक्रम प्रसिद्ध भारतीय एवं पाश्चात्य परम्परा के प्राचीन व आधुनिक वैदिक विद्वानों के विचारों का परिचय देता है | इसका उद्देश्य वैदिक –बौद्धिक और सांस्कृतिक ज्ञान प्रदान करना है |इससे छात्र प्राचीन व आधुनिक व्याख्याकारों के विभिन्न एवं महत्वपूर्ण सिद्धान्तों को समझने में सक्षम हो सकेंगे जिसके परिणामस्वरूप वैदिक ग्रंथों की मूल प्रकृति के बारे में व्यापक दृष्टि बनेगी तथा साथ में ही छात्र वैदिक कालनिर्धारण में भी समर्थ हो सकेंगे |

**निर्धारित पाठ्यक्रम :**

**प्रथम इकाई - वैदिक व्याख्या – प्राच्य पद्धति**

- वेद व्याख्यान परम्परा, प्राचीन तथा आधुनिक व्याख्याकार -सायण, दयानन्द, अरविन्द, सातवलेकर, मधुसूदनओझा,आनन्दकुमार स्वामी, कपालीशास्त्री, आर. एन.दाण्डेकर इत्यादि।

**द्वितीय इकाई - प्रतीच्यपद्धति**

- पाश्चात्य विद्वानों का योगदान, विशेषत - रॉथ वरगेन,लुडविग, गेल्डनर, मैक्समूलर, हिलेब्रानट, ग्रिफिथ, विल्सन इत्यादि।

**तृतीय इकाई - वैदिक व्याकरण**

- वैदिकसंधि (आन्तरिक एवं बाह्य), शब्दरूप एवं धातुरूप, वैदिकस्वर एवं पदपाठ | वैदिक चिन्तन- वैदिक देवता, वेदों की अपौरुषेयता एवं नित्यता, वैदिक दर्शन

**चतुर्थ इकाई - वैदिक कालनिर्धारण**

- मैक्समूलर,ए वेबर,जैकोबी,बाल गंगाधर तिलक, भारतीय परंपरागत विचार

**प्रश्नपत्र का प्रारूप एवं अंक विभाजन –**

| | | | |
|---|---|---|---|
| • प्रत्येक इकाई से 4 दीर्घ प्रश्न | 12×4 | = | **48** |
| • प्रत्येक इकाई से 4 टिप्पणी | 5×4 | = | **20** |
| • किन्हीं 2 वैदिक विद्वानों का परिचय | 3.2×2 | = | **07** |
| कुल अंक | | = | **75** |

**आन्तरिक मूल्यांकन :**

| | |
|---|---|
| • परियोजना | **10** |
| • वस्तुनिष्ठ /लघुत्तरीय परीक्षा | **10** |
| • उपस्थिति एवं अनुशासन | **05** |
| कुल अंक | **25** |

**मूलग्रन्थ**

- ऋग्वेदभाष्यभूमिका - सायण, (सम्पादक) वीरेन्द्र कुमारवर्मा , चौखम्बा ओरियन्टालिया वाराणसी, 1980

- ऋग्वेदभाष्यभूमिका - सायण, (सम्पादक) श्रीकण्ठपाण्डे, भारतीय विद्या प्रकाशन, वाराणसी,1985
- वेदभाष्यभूमिकासंग्रह – बलदेव उपाध्याय, बनारस, 1934.


**सहायकग्रन्थ-**


- श्रीअरविन्द - वेदरहस्य, अनुवादक – आचार्य अभयदेव वि द्यालंकार एवं जगन्नाथ वेदालंकार,श्री अरविन्द आश्रम, पुदुच्चेरी, 2009.
- उपाध्याय, बलदेव – वैदिक साहित्य और संस्कृति, शारदा संस्थान, वाराणसी।
- उपाध्याय, बलदेव – संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास - प्रथमभाग (वेद) – उत्तरप्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ।
- उपाध्याय, बलदेव – संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास – द्वितीय भाग (वेदांग) – उत्तरप्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ।
- चतुर्वेदी, गिरिधर शर्मा – वैदिक विज्ञान और भारतीय संस्कृति, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, 1972.
- त्रिपाठी, गयाचरण – वैदिक देवता उद्भव और विकास, रास्ट्रीय संस्कृत संस्थान्, नई दिल्ली।
- द्विवेदी, कपिलदेव- वैदिक साहित्य एवं संस्कृति, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पंचमसंस्करण 2010.
- पं.भगवद्दत्त- वैदिक वाङ्मय का इतिहास - खण्ड 1-3, परिवर्धक तथा सम्पादक – सत्यश्रवा एम. ए., विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली, 2008.
- पाण्डेय, गोविन्दचन्द्र - वैदिकसंस्कृति, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
- डॉ.फतेहसिंह – वैदिकदर्शन, संस्कृतसदन, कोटा, 1999.

- शर्मा, मुंशीराम – वेदार्थचन्द्रिका , चौखम्बा विद्याभवन, 1967.
- शशि तिवारी, वेदव्याख्यापद्धतयः, प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली, 2014.
- Dandekar, R.N. - Vedic Religion & Mythology: A Survey of the Works of Some Western Scholars, Univ. of Poona, Poona, 1965.
- MacDonnell, A.A. - Brhaddevata, M.L.B.D., 1965

| एम.ए. | सेमेस्टर : चतुर्थ | पूर्णांक : 75+25=100 |
|---|---|---|
| विषय : संस्कृत | | |
| प्रश्नपत्रकोडः A021009T | प्रश्नपत्र शीर्षक : पूर्व मीमांसा एवं बौद्ध दर्शन | |
| क्रेडिट : 5 | वैकल्पिक प्रश्नपत्र **(Elective)** | |

उद्देश्य :

- इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों की मीमांसा एवं भारतीय दर्शन के कतिपय अन्य शाखा (बौद्ध मत) के आधारभूत सिद्धान्तों से परिचित कराना है। इसका आधार लौगाक्षिभास्करकृत प्रमुख मीमांसा ग्रंथ 'अर्थसंग्रह' एवं 'सर्वदर्शनसंग्रह' होगा।
- विद्यार्थियों के लिए मीमांसा दर्शन की पदार्थ–मीमांसा और ज्ञान मीमांसा को जानने के लिए यह ग्रंथ अत्यन्त सहायक सिद्ध होगा।
- विद्यार्थी विविध वैदिक वाक्यों, उनके अर्थ और मीमांसा दर्शन के भाषागत पक्ष से भी अवगत हो सकेंगें।
- विद्यार्थियों की तर्कक्षमता एवं विश्लेषणात्मक क्षमता का विकास हो सकेगा।
- विद्यार्थी भारतीय दार्शनिक पक्ष की विभिन्न धाराओं का तुलनात्मक मूल्यांकन करने में सक्षम होंगे।

| इकाई | पाठ्यविषय |
|---|---|
| 1. | अर्थसंग्रह – लौंगाक्षिभास्कर (प्रारम्भ से श्रुतेर्लक्षणं प्रभेदाश्च तक) |
| 2. | अर्थसंग्रह – लौंगाक्षिभास्कर (विनियोक्त्र्याः श्रुतेः से |

| | |
|---|---|
| | पर्यन्त तक) |
| 3. | अर्थसंग्रह – यंत्र विचार से बाधायोगपसंहार पर्यन्त |
| 4. | बौद्ध दर्शन – सर्वदर्शन संग्रह से |

## प्रश्नपत्र का प्रारूप एवं अंक–विभाजन

(i) प्रथम इकाई से एक व्याख्या = 10

(ii) द्वितीय इकाई से दो व्याख्या 5 x 2 = 10

(iii) तृतीय इकाई से एक व्याख्या = 10

(iv) चतुर्थ इकाई से एक व्याख्या = 10

(v) अर्थसंग्रह से समीक्षात्मक एवं विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

(तीन विकल्पों में से कोई दो) 10 x 2 = 20

(vi) बौद्ध दर्शन (सर्वदर्शन संग्रह) से समीक्षात्मक प्रश्न 7½ x 2 = 15

= 75

सतत मूल्यांकन :–

(अ) पाठ्यक्रम में निर्धारित ग्रंथों पर आधारित अधिन्यास (असाइनमेन्ट) एवं उपस्थिति, अनुशासन एवं आचरण = 10 + 5 = 15

(ब) लिखित परीक्षा (वस्तुनिष्ठ / लघु उत्तरीय) = 10

## प्रस्तुत ग्रंथ


1. अर्थसंग्रह – लौगाक्षिभास्कर , हिन्दी व्याख्याकार, डॉ0 दयाशंकर शास्त्री, चौखम्भा विद्या भवन, वाराणसी

2. अर्थसंग्रह – लौगाक्षिभास्कर , हिन्दी व्याख्याकार, कामेश्वरनाथ मिश्र, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी

3. अर्थसंग्रह – लौगाक्षिभास्कर , हिन्दी व्याख्याकार, वाचस्पति उपाध्याय, चौखम्भा ओरियन्टालिया, वाराणसी

4. अर्थसंग्रह – लौगाक्षिभास्कर , हिन्दी व्याख्याकार, डॉ. राजेश्वर शास्त्री, मुसलगांवकर, चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी (तृतीय संशोधित संस्करण) 2019

5. Arthasangraha – Laugakshibhaskar (ed. & tran.) A.B. Gajendragodkar & R.D. Karmakar, BHandarkar Oriental Research Institute, Poona


## सहायक ग्रंथ


1. गजानन शास्त्री, मुसलगॉवकर – मीमांसा दर्शन का विवेचनात्मक इतिहास, चौखम्भा विद्या भवन, वाराणसी

2. Hiriyana – M – 'Outline of Indian Philosophy, London.

3. Radhakrishnan S – Indian Philosophy, Blackie & sons, Bombay xxxxxxxx

| एम.ए. | सेमेस्टर : चतुर्थ | पूर्णांक : 75+25=100 |
|---|---|---|
| विषय : संस्कृत | | |
| प्रश्नपत्र कोडः<br>A021010T | प्रश्नपत्र शीर्षक :<br>अद्वैत वेदान्त एवं उपनिषद्दर्शन | |
| क्रेडिट : 5 | वैकल्पिक प्रश्नपत्र (Elective) | |

उद्देश्य :

- इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को 'ब्रह्मसूत्र' के अध्ययन द्वारा अद्वैत वेदान्त के सिद्धान्तों को भली–भांति परिचित कराना है। साथ ही भारतीय दर्शन के छः आस्तिक एवं तीन नास्तिक दर्शनों से भिन्न उपनिषदों पर आधारित ब्रह्मज्ञान परक दार्शनिक चिन्तन का अवबोध प्रदान कराना है।
- विद्यार्थी इन ग्रंथों के माध्यम से अद्वैत वेदान्त का तुलनात्मक विश्लेषण कर सकेंगें।
- वेदान्त दर्शन की तत्व मीमांसा, नैतिक एवं विश्लेषणात्मक पक्षों का भी ज्ञान प्राप्त कर सकेंगें।
- पाठ्य–ग्रंथ का गहन ज्ञान विद्यार्थियों के लिए आज के समय में तनाव–प्रबन्धन, विश्व–शान्ति, सामाजिक समरसता और मानव–कल्याण हेतु अत्यन्त सहायक सिद्ध होगा।

| इकाई | पाठ्यविषय |
|---|---|
| 1. | ब्रह्मसूत्र – शांकरभाष्य – (ब्रह्मजिज्ञासाधिकरण एवं |

| | |
|---|---|
| | जन्माद्यधिकरण) |
| 2. | ब्रह्मसूत्र – शांकरभाष्य – (शास्त्रयोनित्याधिकरण एवं समन्वयाधिकरण) |
| 3. | छान्दोग्योपनिषद् (षष्ठ प्रपाठक) – अष्टमखण्ड पर्यन्त व्याख्या (एक) |
| 4. | छान्दोग्योपनिषद् (षष्ठ प्रपाठक) – नवम से षोडशखण्ड पर्यन्त व्याख्या (एक) |
| नोट | प्रत्येक इकाई से विवेचनात्मक एवं विस्तृत उत्तरीय प्रश्न करना होगा। प्रत्येक प्रश्न में दो विकल्प होंगें, जिसमें एक का चयन करना होगा।<br>ब्रह्मसूत्र की प्रत्येक इकाई से एक एक प्रश्न<br>छान्दोग्योपनिषद् की (षष्ठ प्रपाठक की) तृतीय और चतुर्थ इकाई से एक–एक प्रश्न |

## प्रश्नपत्र का प्रारूप एवं अंक–विभाजन

(i) प्रथम इकाई से एक व्याख्या = 10

(ii) द्वितीय इकाई से दो व्याख्या 5 x 2 = 10

(iii) तृतीय इकाई से एक व्याख्या = 10

(iv) चतुर्थ इकाई से एक व्याख्या = 10

(v) प्रथम व द्वितीय इकाई से एक एक विस्तृत उत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक प्रश्न में दो विकल्प होंगें जिसमें एक का चयन करना होगा।) 10 x 2 = 20

(vi) तृतीय और चतुर्थ इकाई से एक एक प्रश्न 7½ x 2 = 15

सतत मूल्यांकन :–

(अ) पाठ्यक्रम में निर्धारित ग्रंथों पर आधारित अधिन्यास (असाइनमेन्ट) एवं उपस्थिति, अनुशासन एवं आचरण। 10 + 5 = 15

(ब) लिखित परीक्षा (वस्तुनिष्ठ / लघुउत्तरीय) = 10

संस्तुत ग्रंथ : –

(1) ब्रह्मसूत्रशांकरभाष्य (चतुः सूत्री) – व्याख्याकार, आचार्य विश्वेश्वर सिद्धान्त शिरोमणि, चौखम्भा विद्या भवन, वाराणसी।

(2) ब्रह्मसूत्रशांकरभाष्य (चतुः सूत्री) – व्याख्याकार रमाकान्त त्रिपाठी, हिन्दी ग्रंथ अकादमी, लखनऊ

(3) ब्रह्मसूत्रशांकरभाष्य – व्याख्याकार , स्वामी हुनुमान जी षट्शास्त्री, चौखम्भा विद्या भवन, वाराणसी।

(4) ब्रह्मसूत्रशांकरभाष्य – व्याख्याकार कामेश्वर मिश्र, चौखम्भा संस्कृत सीरिज आफिस, वाराणसी।

(5) ब्रह्मसूत्रशांकरभाष्य – भामती टीका अनुवाद सहित (सम्पादक) – स्वामी योगीन्द्रानन्द, षडदर्शन प्रकाशन, वाराणसी ।

(6) छान्दोग्योपनिषद् – अनुवाद एवं व्याख्या , श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार , गीता प्रेस, गोरखपुर ।

(7) एकादशोपनिषद्, हिन्दी अनुवाद , गीता प्रेस, गोरखपुर

सहायक ग्रंथ :–

(1) चन्द्रधर शर्मा – भारतीय दर्शन : आलोचन व अनुशीलन, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।

(2) S.M.S. Chari – Fundamental of Visistadvaita Vedanta, MLBD, Delhi.

(3) S.M.S. Chari – The Philosophy of Vasistadvaita Vedanta, MLBD, Delhi.

(4) N.K. Devraj – Introduction to Sankara's Theory of Knowledge, MLBD, Delhi

(5) S. Radhakrishnan – Indian Philosophy , Vol. 1 – 2, London (Hindi Translation by Nanda Kishor Gomil, Delhi)

(6) Rammurti Sharma, Advaita Vedanta, Eastern Book Linkers, Delhi.

(7) Ramchandra Dattatreya Ranade, 'A Constructive Survey of Upanishadic Philosophy' Oriental Books Agency, Pune.

(8) S. Radhakrishnan – 'Principal Upnishads', Centenary Edition, DUP, Delhi.

| एम.ए. | सेमेस्टर : चतुर्थ | पूर्णांक : 75+25=100 |
|---|---|---|
| विषय : संस्कृत (चतुर्थ प्रश्नपत्र – स) | | |
| प्रश्नपत्र कोड : A021011T | प्रश्नपत्र शीर्षक : लौकिक संस्कृत साहित्य का इतिहास | |
| क्रेडिट : 5 | वैकल्पिक प्रश्नपत्र (Elective) | |

उद्देश्य :

इस प्रश्न पत्र का मुख्य उद्देश्य लौकिक संस्कृत साहित्य के ज्ञान भण्डार से विद्यार्थियों को परिचित कराना है। इसके अध्ययन से विद्यार्थियों को लौकिक साहित्य की विभिन्न विधाओं यथा गद्य, पद्य, नाट्य तथा चम्पू के उदभव एवं विकास का ज्ञान प्राप्त हो सकेगा।

निर्धारित पाठयक्रम

प्रथम इकाई – गद्य साहित्य का उद्भव एवं विकास
द्वितीय इकाई – पद्य साहित्य का उद्भव एवं विकास
तृतीय इकाई – नाट्य साहित्य का उद्भव एवं विकास
चतुर्थ इकाई – चम्पू काव्य का उद्भव एवं विकास

## प्रश्नपत्र का प्रारूप एवं अंक विभाजन

| | | | |
|---|---|---|---|
| (i) | प्रथम इकाई से एक दीर्घ प्रश्न | 10 x 1 | = 10 |
| | तथा 2 लघु प्रश्न | 5 x 2 | = 10 |
| (ii) | द्वितीय इकाई से एक दीर्घ प्रश्न | 10 x 1 | = 10 |
| | तथा 2 लघु प्रश्न | 5 x 2 | = 10 |
| (iii) | तृतीय इकाई से एक दीर्घ प्रश्न | 10 x 1 | = 10 |
| | तथा 2 लघु प्रश्न | 5 x 2 | = 10 |
| (iv) | चतुर्थ इकाई से एक दीर्घ प्रश्न | 10 x 1 | = 10 |
| | तथा 1 लघु प्रश्न | 5 x 1 | = 5 |
| | | | = 75 |

आन्तरिक मूल्यांकन –

| | | |
|---|---|---|
| (अ) परियोजना | – | 10 |
| (ब) वस्तुनिष्ठ परीक्षा | – | 10 |
| (स) छात्र/छात्रा की उपस्थिति एवं अनुशासन | – | 05 |
| कुल अंक | | 25 |

**संस्तुत ग्रंथ**


(1) संस्कृत साहित्य का इतिहास – वाचस्पति गैरोला चौखम्भा अमर भारतीय प्रकाशन – वाराणसी।

(2) संस्कृत साहित्य का इतिहास – राजवंश सहाय, हीरा चौखम्भा अमर भारतीय प्रकाशन – वाराणसी।

(3) संस्कृत महाकाव्य परम्परा – (कालिदास से श्रीहर्ष तक) केशवराज मुसलगॉवकर

(4) लौकिक संस्कृत साहित्य का संक्षिप्त इतिहास (हिन्दी रूपान्तर) मूल लेखक डॉ0 गौरीनाथ शास्त्री चौखम्भा , अमर भारती

(5) चम्पूकाव्य का आलोचनात्मक शब्द ऐतिहासिक अध्ययन डॉ0 छविनाथ त्रिपाठी

(6) संस्कृत वाडमय का वृहद इतिहास , उ0प्र0 संस्कृत संस्थान लखनऊ (चतुर्थ एवं सप्तम खण्ड)

(7) संस्कृत साहित्य का इतिहास – प्रो0 बलदेव उपाध्याय, शारदा निकेतन, वाराणसी

(8) संस्कृत नाटक, ए0बी0 कीथ (अनु0 उदयभानु सिंह, मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली – 1965)

(9) संस्कृत नाटककार, कान्तिकिशोर भरतिया सूचना विभाग उत्तर प्रदेश – 1959

(10) नाटककार कालिदास एवं काव्यकार कालिदास परिमल पब्लिकेशन्स दिल्ली – 2001

(11) संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

(12) संस्कृत कवि दर्शन, भोला शंकर व्यास, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी

(13) राजशेखर के रूपकों में प्रेम एवं सौन्दर्य –. डॉ0 आशारानी पाण्डेय, निखिल प्रकाशन, आगरा।

(14) History of Classical Sanskrit Literature Krishnamachariar

(15) History of Saskrit Literature by AA Macdonell

| एम.ए. | सेमेस्टर : चतुर्थ | पूर्णांक : 75+25=100 |
|---|---|---|
| विषय : संस्कृत (चतुर्थ प्रश्नपत्र) | | |
| प्रश्नपत्र कोड :<br>A021012T | प्रश्नपत्र शीर्षक : आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास (परिचयात्मक विवरण 1920 ई0 से 2000 ई0 पर्यन्त | |
| क्रेडिट : 5 | वैकल्पिक प्रश्नपत्र (Elective) | |

उद्देश्य :

- इस प्रश्नपत्र का मूल उद्देश्य विद्यार्थियों को संस्कृत साहित्य में आधुनिक काव्य तथा कवियों की सुदृढ़ परम्परा से परिचित कराना है। इसके अध्ययन से विद्यार्थी आधुनिक संस्कृत लेखन में प्रयुक्त नवीन विधानों से भी परिचित होंगें।

निर्धारित पाठयक्रम

प्रथम इकाई – आधुनिक संस्कृत साहित्य
महाकाव्य, खण्डकाव्य, चम्पूकाव्य, नाटक,
एकांकी

द्वितीय इकाई – कथा, उपन्यास, कहानी संग्रह, स्त्रोत काव्य,
लोकगीत, कज्जलिका

तृतीय इकाई – संस्कृत पत्रकारिता, डायरी, यात्रावृत्तान्त अनुवाद

चतुर्थ इकाई – समकालीन काव्य में अलंकार एवं छन्दोविधान में अभिनव
प्रयोग यथा – हाइकू, तान्का, सवैया, दोहा, सोरठा

## प्रश्नपत्र का प्रारूप तथा अंक विभाजन –

| | | | |
|---|---|---|---|
| (1) | प्रथम इकाई से 5 प्रश्न | – | 5 x 5 = 25 |
| (2) | द्वितीय इकाई से 4 प्रश्न | – | 5 x 4 = 20 |
| (3) | तृतीय इकाई से 3 प्रश्न | – | 5 x 3 = 15 |
| (4) | चतुर्थ इकाई से 3 प्रश्न– | – | 5 x 3 = 15 |
| | कुल अंक – | | 75 |

## आंतरिक मूल्यांकन

| | | | |
|---|---|---|---|
| (अ) | परियोजना | – | 10 |
| (ब) | वस्तुनिष्ठ /लघुउत्तरीय परीक्षा | – | 10 |
| (स) | उपस्थिति एवं अनुशासन | – | 05 |
| | कुल अंक 75 + 25 | = | 100 |

## संस्कृत ग्रन्थ :


(1) संस्कृत साहित्य – बीसवीं शता0 – डॉ0 राधावल्लभ त्रिपाठी – राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान जनकपुरी, नई दिल्ली ।

(2) आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास (वृहद) (सप्तम खण्ड) डॉ0 बलदेव उपाध्याय, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ

(3) संस्कृत साहित्य का इतिहास – राजशेखर पाण्डेय

(4) संस्कृत साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा – डॉ0 रेखा शुक्ला, प्रतिभा प्रकाशन – नई दिल्ली ।

(5) आधुनिक संस्कृतसाहित्येतिहासः – देवर्षि कलानाथ शास्त्री

(6) पतंजलिचरित महाकाव्य का समीक्षात्मक अध्ययन – डॉ0 शालिनी अग्रवाल, परिमल पब्लिकेशन्स , नई दिल्ली ।

(7) विंशति शताब्दी संस्कृत काव्यामृत – प्रो0 अभिराज राजेन्द्र मिश्र

(8) आधुनिक संस्कृत काव्य परम्परा – केशवराव मुंसलगॉवकर